।। श्री चतुर्विंशति जिनाय नमः।।

भक्ति के फूल

जिन दर्शन से हृदय का नूर खिलता है।
जिन अर्चा से सम्यक्ज्ञान का दीप जलता है।।
लोग कहते हैं मंदिर जाने से क्या होता है।
अरे बंधुओं ! जिन दर्शन से कुछ न कुछ जरुर मिलता है।।

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **भक्ति के फूल**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – **प्रथम – 2010**

प्रतियाँ – **1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **ब्र. सुखनन्दन भैया**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी**

संयोजन – **किरण, आरती दीदी (9829127533)**

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
नेहरु बाजार, जयपुर (राज.) मो.: 9414812008
फोन : 0141–2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला–सागर (म.प्र.) फोन : 07581–274244
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए–107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 21/– रु.

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री नरेन्द्र कुमार, चिराग जैन (स्कीम 10) अलवर
श्री अनिल कुमार जैन (सुपाड़ी वाले) अलवर
श्री गुलाबचन्द, अभिषेक, दीपक जैन (मसाला वाले) अलवर

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

दो शब्द

भक्त और भगवान का नाता बहुत पुराना है।
यह अंजाना नहीं सबका जाना माना है।।
भक्त ही भगवान बनता है आगम कहा है।
इसलिए भक्त बनकर भक्ति में मन लगाना।।

भक्त और भगवान का संबंध एक श्रेष्ठ संबंध है। माता-पिता का भाई-बहिन का, चाचा-भतीजा आदि का संबंध तो संसार को बढ़ावा देने वाले हैं; किन्तु भक्त और भगवान का संबंध तो स्वर्ग और मोक्ष को प्रदान करने वाला है। भक्त जब भक्ति में लीन हो जाता है, हेय-उपादेय को भूल जाता है। भक्त के भक्ति करने के अनेक तरीके होते हैं चाहे वह पूजन, पाठ, स्तुति, भजन, आरती आदि हो। इन सबका आलंबन मात्र गुणगान करना ही और पुण्य-संचय करके अनेक पाप कर्मों को नष्ट करना है। इसी बात को लक्ष्य **परम पूज्य, तीर्थ जीर्णोद्धारक, सिद्धांतविज्ञ, कविहृदय, वात्सल्यमूर्ति, साहित्य रत्नाकर, चँवलेश्वर के छोटे बाबा, क्षमामूर्ति, 50 विधानों के रचियता, परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज** द्वारा **'भक्ति के फूल'** नामक पुस्तक को तैयार किया है। इस पुस्तक में अनेक भजन, मुक्तक दिये हैं जो जीवनोपयोगी हैं। साथ ही जब प्राणी परेशानी में हो, यह भजनावलियाँ ही इंसान को सत् राह दिखाती है। हम उपकारी हैं, गुरु के जो हरपल हम अज्ञानी प्राणियों को पुण्य-संचय करने के लिए अनेक रचनाएँ करते रहते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है जो एक बार भक्ति के फूलों की खुशबू में रम जाएगा वह संसार के दलदल में अन्यत्र भ्रमण नहीं करेगा। अंत में आस्था भक्ति से नवकोटि पूर्वक गुरु चरणों में विशद भावना....

अब नींद लगे तो स्वप्न हो आपका।
नींद से जागू तो दर्शन हो आपका।।
हरपल हरक्षण जुबाँ पर नाम हो आपका।
अंत समय दम निकले तब दामन हो आपका।।

- आस्था दीदी

उद्धार करो

(तर्ज : तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभु)

किया तूने जगत उद्धार गुरु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।
तू सद्ज्ञानी आतमज्ञानी, मुझे भवसागर से पार करो।।
नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करें।
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करें।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो।।1।।

भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो।।2।।

तेरी महिमा अगम अगोचर, जग में एक सहारा है।
जग में रहकर जग से न्यारा, सबका तारण हारा है।।
अब मैं चाहूँ, गुरुवर-गुरुवर, जो वीतराग मय रूप तेरा।
उस रूप मेरा आकार कर दो।।3।।

जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर तू है मस्जिद, 'विशद' ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो।।4।।

मुझे आपकी ही राहों पर, मेरे गुरुवर चला देना।
मेरी खोई हुई मंजिल, मेरे गुरुवर मिला देना।।
बुझाया ज्ञान का दीपक, मोह मिथ्यात्व ने मेरा।
विशद विज्ञान का दीपक, गुरु मेरा जला देना।।

भजन–संयम

(तर्ज : हम तुम युग–युग से...)

संयम को युग–युग से प्राणी पाते रहे हैं, पाते रहेंगे।
रत्नत्रय को पाकर मोक्ष जाते रहे हैं, जाते रहेंगे।।

जब–जब हमने जीवन पाया, तब–तब मोह जगा अपना।
हर बार मिले अपने साथी, यह मात्र रहा कोरा सपना।।
श्रद्धा से हीन रहे जग में, सब व्यर्थ रहा तप से तपना।
श्रद्धा जागे अन्तर्मन में, तब सार्थक हो माला जपना।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

जब–जब हमने प्रभु को ध्याया, तब–तब श्रद्धा के फूल खिले।
जब श्रवण किया जिनवाणी का, तब विशद ज्ञान के दीप जले।।
जब अन्तरदृष्टि हुई मेरी, परमात्म स्वयं के हृदय मिले।
जिस राह पे गुरु के कदम बढ़े, उस राह पे हम भी स्वयं चले।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

जो संयम के पथ पर चलते, मंगलमय जीवन हो उनका।
समता की धार बहे पावन, स्नेह मिले फिर जन–जन का।।
जो लीन स्वयं में हो जाते, न ध्यान रहे उनको तन का।
गुलशन खिलता है मन मोहक, जीवन में उनके चेतन का।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

श्रद्धा के फूल खिलाना चाहिये, ज्ञान के दीपक जलाना चाहिये।
मुक्ति का मारग है अनुपम अरे, संयम से जीवन सजाना चाहिये।।

यही परमात्मा मेरे, यही ईश्वर हमारे हैं, नायक है ये जीवन के, चरण इनके सहारे हैं।
मेरे जीवन की हर सांसें, समर्पित इनके चरणों में, पड़े अंतिम क्षणों तक शब्द शुभ मेरे इन कर्णों में।।

(तर्ज : जिस दिन प्रभु जी तेरा दर्शन होगा....)

जब से गुरुजी तेरे द्वारे आया।
तब से निजातम का आनन्द पाया।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, सारे जग में भटक लिया
पूरब पश्चिम .... हो ऽऽऽऽऽऽ
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में, दर–दर पे सर पटक लिया
कई बार जग में धोखा खाया........।।1।।

मन मंदिर में प्रभु बैठे हैं, उनका दर्शन नहीं किया।
मन मंदिर में.... हो ऽऽऽऽऽऽ
स्वयं आप रसकूप है चेतन, उसका आनन्द नहीं पिया
मोह का अंधेरा मेरे जीवन में छाया..........।।2।।

विशद गुरु का रूप सलोना, वीतराग दर्शाता है
विशद गुरु का....... हो ऽऽऽऽऽऽ
भव्य भ्रमर जो गुरु चरणों का उनका मन हर्षाता है–2
गुरुवर ने सम्यक् ज्ञान जगाया ....।।3।।

मोक्ष मार्ग पर चलने वाले, गुरुवर जग के त्राता हैं
मोक्ष मार्ग पर .... ऽऽऽऽऽऽ
रत्नत्रय के धारी गुरुवर पंचाचार प्रदाता हैं
गुरुवर को हमने–मन में ध्याया ....।।4।।

विशद भावों से हम गुरुदेव के, शुभ दर्श पाएंगे, तहे दिल से गुरु चरणों का, हम स्पर्श पाएंगे।
गुरु भक्ति गुरु शिक्षा, हमें शिवपद दिखाती है, गुरु आशीष पाकर के, शुभ आदर्श पाएंगे।।

सदाचार से इन्सान का व्यवहार सफल होता है, सद् व्यवहार से लोगों का विचार सफल होता है।
हमारे विचार यदि उत्तम रहें जीवों के प्रति, तो प्राणी मात्र का हमसे प्यार सफल होता है।।

(तर्ज : गा रहा हूँ मैं....)

पा रहे हैं हम जो कुछ भी, आपकी इनायत है।
आज हम जो कुछ भी हैं, आपकी अमानत है।।

1. आपके सहारे हम जिन्दगी ये जी लेंगे।
घूँट कोई कड़वे मीठे, हँसकर के पी लेंगे।।
आपके हैं सेवक हम, आपकी इनायत है.....

2. आपकी छाँव तले, जिन्दगी बनाई है।
आपकी कृपा से हमने धर्म निधि पाई है।।
आप से ही पाया सब कुछ, आपकी इनायत है.....

3. आपका आशीष पाया, सौभाग्य ये हमारे हैं।
आप गुरु मंजिल के, बहुत ही किनारे हैं।।
'विशद' मोक्ष मंजिल पाएँ, आपकी इनायत है.....

4. राह जो दिखाई है, आगे चलते जाएँगे।
ज्ञान के दीपक उर में, मेरे जलते जाएँगे।
शीश ये झुका पद में, आपकी इनायत है.....

(तर्ज : गुरुवर तुम्हें नमस्ते हो.....)

1. गुरुवर तेरी जय जय हो, गुरुवर तुम मंगलमय हो।
गुरुवर ज्ञान के आलय हो, चलते हुए शिवालय हो।।

2. गुरु कर्मों के हर्ता हैं, मुक्ति वधु के भर्ता हैं।
सद्भावों के कर्ता हैं, गुरु में भरी अमरता हैं।।

3. गुरु के गुण को गाना है, भक्ति गीत सुनाना है।
चरणों शीश झुकाना है, गुरु का आशीष पाना है।।

4. जिसने गुरु गुणगान किया, गुरु का सद् सम्मान किया।
सच्चे मन से ध्यान किया, आतम का कल्याण किया।।

5. जग में मंगल करते हैं, जन-जन का दुःख हरते हैं।
ज्ञान सुधामृत भरते हैं, सिद्धशिला को वरते हैं।।

6. हमको ज्ञान सिखाया है, 'विशद' मार्ग दिखलाया है।
शीश पे गुरु की छाया है, भव से पार लगाया है।।

अरिहंत वंदना

(तर्ज : राम न मिले हनुमान के बिना...)

मोक्ष न मिले अरहंत के बिना। अरहंत बने नाहिं संत के बिना।।
कर्मों का जिसने घात किया है, ज्ञान दर्शन सुख प्राप्त किया है।
सिद्ध न बने कर्म अन्त के बिना। अरहंत.....
पंचाचार को पाल रहे हैं, पद आचार्य सम्भाल रहे हैं।
उपाध्याय न हों द्वादशांग के बिना। अरहंत.....
राग द्वेष मोह से हीन कहे हैं, विशद ज्ञान ध्यान में लीन रहे हैं।
साधना न होती है संत के बिना। अरहंत.....
जिनधर्म आगम को आप ध्याइये, चैत्य और मंदिर के दर्श पाइये।
अंत न मिले मोक्ष पंथ के बिना। अरहंत.....
संतों का जिसने दर्श किया है, चरणों को भी स्पर्श किया है।
कोई नहीं मीत महामंत्र के बिना। अरहंत.....

बाल प्रार्थना

(तर्ज : भोले भाले भगवन् मेरे....)

क्षमामूर्ति हे गुरुवर ! मेरे, क्यों तुम हमसे रूठे हो।
बात-बात पर हँसने वाले, क्यों तुम चुप होकर बैठे हो।।
चेहरा ऊपर करके देखो, चरणों शीश झुकाते हैं।
बड़े चाव से आशा लेकर, दर्शन करने आते हैं।। क्षमामूर्ति...
हमने तुमको अपना माना, तुम्हीं हमारे दाता हो।
तुम ही माता-पिता हमारे, गुरुवर आप विधाता हो।। क्षमामूर्ति...
हाथ जोड़कर वंदन करते, शुभाशीष गुरुवर दे दो।
तव चरणों में सेवक गुरुवर, चरण-शरण अपनी ले लो।। क्षमामूर्ति...
मुस्करा दो हे गुरुवर ! मेरे, हम बच्चों को क्षमा करो।
इतनी शक्ति हमें दो गुरुवर, हमको अपने समा करो।। क्षमामूर्ति...
तुम हो तारण-तरण मुनीश्वर, भव सागर से पार करो।
'विशद' ज्ञान संयम के द्वारा, हम सबका उद्धार करो।। क्षमामूर्ति...

भजन

(तर्ज : आया कहाँ से कहाँ...)

नव वर्ष आया खुशियों को लाया, नये गीत गाओ भाई।
नये गीत गाओ, ताली बजाओ भाई-ताली बजाओ-2....
नये वर्ष में नये फूलों का, हमको बाग लगाना है।
नये गुणों को पाकर अपना, जीवन नया बनाना है।।
नव वर्ष आया, गुरुवर को पाया, नये गीत गाओ भाई-2....।।
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति कर, अतिशय पुण्य कमाना है।
मूलगुणों का पालन करके, सत् श्रावक बन जाना है।।
मन में ये आया- गुरु ने बताया, नये गीत गाओ भाई-2....।।
नये वर्ष पाकर कई हमने, व्यर्थ कार्य में गंवा दिए।
शुभम् सुहित के काम आज तक, हमने शायद नहीं किए।।
नव वर्ष पाया, नव हर्ष छाया- नये गीत गाओ भाई-2....।।
नये वर्ष की नई खुशी में, दीपक नये जलाना है।
बिछुड़े हुए हमारे बंधु, मंदिर उनको लाना है।।
कभी न आया, उसको बुलाना, नये गीत गाओ भाई-2....।।
पूजा भक्ति तीर्थ वंदना, करके हर्ष मनाएँगे।
'विशद' गुणों को पाकर जीवन, फूलों सा महकायेंगे।।
मन में ये आया, सब से बताया, नये गीत गाओ भाई-2....।।

एक तो हमें गुरुवर, आपके दर्श नहीं होते, दर्श हो भी जाए तो, चरण स्पर्श नहीं होते।
चरण स्पर्श कभी-कभी हो जाते हैं, किन्तु चाहते हुए पर नये वर्ष नहीं होते।।

इन्सान को इन्सान तू इन्सान बना रहने दे, इन्सान को इन्सानियत की राह में ही बहने दे।
इन्सानियत के हेतु सभी कष्ट उन्हें सहने दे, इन्सान से इन्सानियत की बात हमें कहने दे।।

(तुम्हीं हो माता...)

तुम्हीं हो दाता, तुम्हीं हो त्राता, तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो।
तुम्हीं ने हमको मार्ग दिखाया, तुम्हीं ने मेरा साथ निभाया- आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं ने ज्ञान दिया है हमको-2
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....
तुम्हीं ने मेरा भाग्य जगाया, चरण शरण की मिली जो छाया- आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं हो अर्हन्, तुम्हीं हो भगवन,
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....
तुम्हीं हो दर्शन, तुम्हीं जिनालय, तुम अतीत के परम शिवालय-आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं हो वाणी, विशद शरण हो।
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....

समर्पण

गुरुवर जी के साथ में चलना प्यारा लगता है।
बिन गुरुवर के वीराना जग सारा लगता है।।
गुरुवर का जयकारा बोलें, जय-जयकार करें।
गुरुवर के चरणों में रहकर, निज उद्धार करें।।
नगर-2 में गुरुवर का ऽऽ जयकारा लगता है।।1।।
नयन कमल पुलकित हो जाते, गुरु के दर्शन पाकर।
मन वीणा झंकृत होती है, गुरु के गुण को गाकर।।
जहाँ सत्य अहिंसा परम धर्म ऽऽ का नारा लगता है।।2।।
प्रबल पुण्य का योग जगे तव, गुरु का दर्शन मिलता।
गुरुवर की वाणी सुन करके, ज्ञान का दीपक जलता।।
मेरे गुरुवर का दरबार जहाँ ऽऽ से न्यारा लगता है।।3।।
भाग्यवान होता है जिसको गुरु आशीष मिले।
भाव सहित भक्ति करने से, श्रद्धा सुमन खिले।।
गुरु भक्तिमय जीवन विशद ऽऽ सितारा लगता है।।4।।

भजन

कौन सुनेगा किसको सुनायें, इसलिए चुप रहते हैं।
अपने रूठ न जायें, इसलिए चुप रहते हैं।।
अति संघर्ष भरे जीवन से, दिल मेरा घबराया है।
गैरों की क्या कहें हमें तो, अपनों ने ही भरमाया है।।
राज ये दिल का-2 खुल न जायें- इसलिए.....
हँसता-खिलता जीवन मेरा, जाने कहाँ पर खो गया।
फूल भरी राहों पर मेरी, कौन ये काँटा बो गया।।
पग ये आगे कैसे बढ़ायें- इसलिए.....
मेरे जीवन की वीणा में, तार दुःखों का जोड़ दिया।
आये थे तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया।।
टूटी ये वीणा-2 कैसे गायें......इसलिए.....
संयम देकर तुमने मुझको, अपने से क्यों दूर किया।
गम में तड़पते रहने को मुझे, तुमने क्यों मजबूर किया।।
दर्द विरह का-2 किसको दिखाये- इसलिए.....
तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं।
दुनियाँ वाले जान न पायें, अधर मेरे मुस्कराते हैं।।
आँख से आँसू-2, बह न जायें- इसलिए.....

* * *

बिन माँगे ही यहाँ पर भरपूर मिलता है, आशाओं से अधिक जी हुजूर मिलता है।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बन्धु, पर गुरुदेव के दर पर जरुर मिलता है।।

अपने हृदय में प्रभु की, जागीर बना रखी है, पार्श्व प्रभु की अनुपम, तस्वीर बना रखी है।
उन्हीं को माना है हमने अपना सब कुछ, उनके चरणों में अपनी तकदीर बना।।

भजन

हम भूल जाएँ रे संसार, मगर प्रभु द्वार नहीं भूलें।
इस जीवन का आधार ऽऽऽ धर्म का सार नहीं भूलें।।
इस भव में जो भी भटक रहे, उनको बस एक सहारा है।
प्रभु की जो भक्ति करते हैं ऽऽ मिलता बस उन्हें किनारा है।।
भव से हो जाते पार ऽऽऽ कभी यह बात नहीं भूलें। इस जीवन...
अज्ञान तिमिर के कारण ही, भव सागर में भटकाते हैं।
सुख-शांति न मिल पाती उनको ऽऽऽ वह तो दुःख सहते जाते हैं।।
अब करें आत्म उद्धार ऽऽऽ धर्म आधार नहीं भूलें। इस जीवन...
सद्धर्म के द्वारा इंसां का सौभाग्य बदलता जाता है।
सद्ज्ञान दीप ज्योतिर्मय सा ऽऽ तब उर में जलता जाता है।।
पा जाऊँ मुक्ति द्वार ऽऽऽ नहीं शिव द्वार कभी भूलें। इस जीवन...
प्रभु चरण रहे उर में मेरे, मम हृदय रहे प्रभु के पद में।
हो विनय भाव मन में हरदम ऽऽ नहिं भूल जाएँ पर के मद में।।
प्रभु कर दो ये उपकार ऽऽऽ नहीं उपकार कभी भूलें। इस जीवन...
तुमने प्रभुवर सारे जग को, सच्चा सन्मार्ग दिखाया है।
जो भटके थे राही जग में, उनको भव पार लगाया है।।
हम बने 'विशद' अनगार ऽऽऽ नहीं यह बात कभी भूलें।। इस जीवन...

* * *

जुल्म सहकर भी जो उफ नहीं करते वह लोग भी अजीब होते हैं।
वह तो सजीव होते ही है उनके उपदेश भी सजीव होते हैं।।
गुरुओं का आशीष सभी को प्राप्त नहीं होता प्रिय बन्धु !
गुरु जिनके करीब होते हैं दुनियाँ में वह बड़े खुशनसीब होते हैं।।

भजन

प्रभु पारस की बोलो जयकार सभी जय-जय बोलो।
बोलो-बोलो सभी जयकार सभी जय-जय बोलो।
जिसने प्रभु को मन से ध्याया, भक्ति भाव से शीश झुकाया।
हो गया भव से पार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस....।।1।।
जो भी प्रभु की शरण में आते, पार्श्व प्रभु के गुण को गाते।
पाते सौख्य अपार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस....।।2।।
दीन दुखी दुःख हरने वाले, जग का मंगल करने वाले।
इस जग के आधार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस....।।3।।
प्रभु हैं मोक्ष मार्ग के दाता, सर्व चराचर के हैं ज्ञाता।
'विशद' ज्ञान के हार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस....।।4।।

* * *

भजन

मात-पिता औ गुरु की सेवा, करना अपना काम।
कि भैया उनको करो प्रणाम, कि भैया गुरु को करो...
प्रातः उठकर जाप करो और, प्रभु का लेना नाम। कि भैया.....
कर स्नान करो नित पूजन, गुरु को देना दान। कि भैया.....
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, रखना सद्श्रद्धान। कि भैया.....
तीन काल सामयिक करिए, करिए आतम ध्यान। कि भैया.....
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण और, तप का हो सम्मान। कि भैया.....
सत्य अहिंसा दया भाव युत, करना अपना काम। कि भैया.....
भक्ति मय हो दैनिक चर्या, भक्तिमय हो शाम। कि भैया.....
प्रातः जल्दी उठने हेतु, करो शीघ्र विश्राम। कि भैया.....
'विशद' भावना भाते हैं हम, पावे मुक्ति धाम। कि भैया.....

भजन

(तर्ज : ये नर तन मिला मुझे माटी के मोल...)

अरे ! जाग तू मुसाफिर, आँखें तो खोल।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।।
कौन है तू सोच, तेरा क्या है धरम।
किए तूने अब तक, क्या-क्या करम।।
अंदर में झाक तू, अपने को तोल। जय जिनेन्द्र.....
अपने किए का तू फल पाएगा।
लाया था साथ क्या तू ले जाएगा।।
निर्मल हृदय से तू खुद को टटोल। जय जिनेन्द्र.....
अपनों के बीच तूने पाया है क्या ?
जाएगा साथ कोई आया है क्या ?
खोता क्यों नर तन तू माटी के मोल। जय जिनेन्द्र.....
स्वारथ की दुनियाँ में स्वारथ को देख।
आया था एक तू औ जाएगा एक।।
अमृतमय जीवन में विष न तू घोल। जय जिनेन्द्र.....
निज के किए का फल, निज को मिले।
श्रद्धा के फूल 'विशद' उर में खिले।।
अमृतमय जीवन में अमृत बिलोल। जय जिनेन्द्र.....

मिले आशीष गुरुवर का, जिसे वह धन्य हो जाए।
जगे सौभाग्य उनका शुभ, हृदय खुशियों से भर जाए।।
जमीं पर स्वर्ग मिल जाए, विशद इंसान को भाई।
विशद इंसान भूमि पर, स्वयं भगवान बन जाए।।

भजन

कभी तो ये गुरुवर, ज्ञाता बन जाते हैं।
सद् ज्ञान के ये गुरुवर, दाता बन जाते हैं।। टेक।।
मुख मोड़ लिया तुमने, हम कहाँ पे जाएँगे।
हर हाल में हे गुरुवर ! गुण तेरे गाएँगे।।
मुक्ति की जो हमको सद् राह दिखाते हैं।
संसार पार करके वह मोक्ष दिलाते हैं।। मुक्ति..... तो बोलो ना.....
सुना है गुरु तुमने, भक्तों को तारा है।
जो आया दर तेरे, भवपार उतारा है।। सुना है..... तो बोलो ना.....
गुरु चरण शरण ले लो, हम भक्त तुम्हारे हैं।
हम भक्तों के भगवान, गुरुदेव हमारे हैं।। गुरुचरण...तो बोलो ना...
गुरुदेव की जय बोलो, गुरु का गुणगान करो।
गुरुदेव 'विशद' अपने, उनका सम्मान करो।। गुरुदेव...तो बोलो ना...

भजन

गुरु विमल सागर की यादें, नयनों में नीर ले आयें।
उपकार तुम्हारा स्वामी, हम कैसे भुलायें। हो तुम्हें शीश झुकायें...
तेरहवें तीर्थंकर जैसा, गुरुदेव का नाम विमल था-2
गुरु आशीश की छाया से, तीरथ उद्धार अटल था।
श्रमणों के हे ध्वजनायक ! हमको सन्मार्ग दिखायें। उपकार तुम्हारा स्वामी..
वात्सल्य मूर्ति, मूर्तेश्वर, व्यवहार तेरा निश्चल था-2
निर्मल कोमल था मधुर मन, हृदय स्वर्ण कमल था।
तेरे ज्ञान की अमृतवाणी, दुखियों को धीर बँधाये। उपकार तुम्हारा स्वामी..
सम्मेद शिखर सोनागिर, गुरुदेव को याद करेंगे-2
चाहे घूमे समय की छतरी, छतरी पे मेले भरेंगे-
अवशेष जो तेरे दुलारे, स्मृति में दीप जलायें। उपकार तुम्हारा स्वामी...

(तर्ज : जीवन है पानी की बूँद)

जीवन है कागज की नाव, कब गल जाए रे ....ऽऽ
तेरा ही चेतन हो-हो, तुझको कब छल जाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...
सोच कहाँ से आया तू, आगे कहाँ पे जाए तू,
कोई रोक न पाएगा..ऽऽ
चतुर्गति में भटक लिया, दर-दर माथा पटक लिया।
जिनवर के चरणों हो-हो, न माथ झुकाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...1
जीने का भी ज्ञान नहीं, मरने का भी ध्यान नहीं,
तुझको कौन जगाएगा...ऽऽ
कई जनमों में मरण किया, धर्म कर्म न वरण किया।
अन्तर में अपने हो-हो, न धर्म जगाए रे....ऽऽ जीवन है कागज...2
कभी स्वयं को ध्याया न, सत् श्रद्धान जगाया न,
कैसे शांति पाओगे.....ऽऽ
अब श्रद्धा को पाना है, सम्यक् ज्ञान जगाना है।
संयम से जीवन हो-हो, न स्वयं सजाए-रे.....ऽऽ जीवन है कागज...3
मोह में खुद को भूल गया, मद माया में फूल गया।
धर्म कर्म से दूर रहा......ऽऽ
कभी गिने संगी साथी, कभी गिने घोड़े हाथी।
इनमें ही खुद को हो-हो, तू क्यों भरमाए रे....ऽऽ जीवन है कागज...4
प्रभु के गुण को गाया न, विशद ज्ञान को पाया न।
कैसे जीवन पावन को......ऽऽ
इस तन को अपना माना, चेतन को न पहिचाना।
जीवन को पाकर हो-हो, क्यों व्यर्थ गवाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...5

हजारों महफिले होंगी, हजारों कारवाँ होंगे।
जमाना हमको ढूँढ़ेगा, न जाने हम कहाँ होंगे।।

(तर्ज : मंजिल के राही रे... एक-एक पग रखना)

आतम के ध्यानी रे ऽऽ, करो ध्यान भाव से।
एक-एक पल ध्याओ, चेतन को चाव से।।
बड़े पुण्य से हमने नर भव ये पाया।
महामोहतम ने जगत में भ्रमाया।
करो पार नैया अब संयम की नाव से।।
एक-एक पल ध्याओ...

जिनवर की वाणी अपने हृदय में बसाओ।
चेतन के चिंतन में चित्त को लगाओ।
अवसर मिला है पावन, चूको नहीं दाव से।।
एक-एक पल ध्याओ...

सुख का खजाना जग में धर्म ही सहारा है।
मुक्ति की मंजिल पाना, लक्ष्य ये हमारा है।
ज्ञानी और ध्यानी होता आतम स्वभाव से।
एक-एक पल ध्याओ...

आतम की सिद्धि हेतु सिद्धों को ध्याना है।
उनके गुणों को अपने हृदय में बसाना है।
पाओ प्रभु के गुण को, कोई भी उपाय से।
एक-एक पल ध्याओ...

गुरुवर के चरणों आये, गुरु गुण को पाने।
भव वन से भटकी नौका, पार अब लगाने।।
करते हैं विनती गुरुवर, 'विशद' हाव-भाव से।
एक-एक पल ध्याओ...

जलने वाला दीप ही, प्रकाश दे पाता है, खिलने वाला फूल ही, सुवास दे पाता है।
दुनियाँ में रहते हैं, यूँ तो अनेकों मित्र, अपने से मिलने वाला ही, विश्वास दे पाता है।।

(तर्ज : बुन्देली गीत...)

अधूरी अधरों की है प्यास, दर्श को तरस रही हर श्वांस।
आश ले द्वारे आये हैं, परम पूज्य गुरुवर के पद में शीश झुकाए हैं।
कि मोरी सुन लइयो, दर्श मोय दे दइयो।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण अरु, सम्यक् तप को पाते।
वीतरागता को पाने की, सतत भावना भाते।।
आतम शुद्ध करने हेतु, नित प्रति ध्यान लगाते।
शुद्धि बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, निज आतम को ध्याते।।
निरन्तर करते हैं जो ध्यान निराली संतों की है शान।
भावना बारह भाए हैं- परम पूज्य...।।1।।

जहाँ-जहाँ पग पड़ते गुरु के, जन-जन मन हर्षाएँ।
पूजा भक्ति करते गुरु की, भाव सहित गुण गाएँ।।
सुनकर के उपदेश धर्म का, श्रद्धा हृदय जगाते।
व्रत संयम अरु नियम के द्वारा, जीवन स्वयं सजाते।।
करे जो गुरुवर का गुणगान, उन्हीं का होता है कल्याण।
जो भी शरण में आये हैं- परम पूज्य...।।2।।

श्वांस चले जब तक इस तन में, गुरुवर के गुण गाऊँ।
जनम-जनम में श्री गुरुवर को, अपने हृदय बसाऊँ।।
'विशद' भाव से गुरु चरणों में, अपना शीश झुकाऊँ।
गुरुवर के ही चरण शरण में, मरण समाधि पाऊँ।।
कि तुमने किया जगत् उद्धार, आई मेरी भी अब बार।
गुरु हम आश लगाए हैं- परम पूज्य...।।3।।

तुम नाथ हो गुरु हम बन्धुओं के, तुम सिन्धु हो गुरु सब सिन्धुओं के।
है ज्ञान के समन्दर श्री विराग सिन्धु, तब पाद पंकज में 'विशद' कर जोर वंदू।।

भजन

बोलते चलो जय बोलते चलो, गुरुवर की जय-जय बोलते चलो।
ज्ञानी और ध्यानी मेरे गुरु हैं महान, वीतरागी गुरु गुण रत्नों की खान।
करना है हमें गुरु का गुणगान, गुरु बिना होगा नहीं कभी कल्याण।।
आत्मा के गुण को बिलोलते चलो.... ।।1।।
गुरु के बिना नहीं होता सद्ज्ञान, गुरु भक्ति से बढ़े भक्तों की शान।
बढ़ता है सारे जग में सम्मान, भक्ति से भक्तों का हो निर्वाण।।
चेतन की शक्ति को तोलते चलो..... ।।2।।
गुरु भक्ति से जले ज्ञान के चिराग, गुरु भक्ति से रहे मन में विराग।
मोह और माया को अब तो तू त्याग, सो रहा सदियों से भाई अब जाग।।
विशद हृदय के पट खोलते चलो..... ।।3।।
गुरु के ज्ञान का कोई पार नहीं है, गुरु बिन जग में आधार नहीं है।
गुरुवर के मन में विकार नहीं है, गुरु गुण सम उपहार नहीं है।।
गुरु गुण अमृत घोलते चलो.......... ।।4।।

भजन

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी पड़ी रहती अदालत तुम्हारी।।
नहीं कोई आता फिर दर पे तुम्हारे, तो सूने पड़े रहते मंदिर ये सारे।।
कृपा करना भक्तों पे विनती हमारी.... तो.... ।।1।।
दुःखी जब पुकारे तो दुःख हरना आके, जाये न कोई दर से मन को दुखा के।
शुभाशीष देना चाहे नर हो या नारी.... तो.... ।।2।।
कृपा का ही फल भक्त आते हैं द्वारे, श्रद्धा सहित बोलते जय-जयकारे।
ये जीवन दिया हमको कृपा की है भारी....तो.... ।।3।।
जीने की हमको कला भी सीखा दो, मुक्ति का हमको शुभ मार्ग दिखा दो।
कर दो कृपा हम पे हे जग के उपकारी ....तो.... ।।4।।
हम आये चरण में 'विशद' मुक्ति पाने, आतम को आतम में आतम से ध्याने।।
करुणा करो नाथ करुणा के धारी ....तो.... ।।5।।

(तर्ज- कर तू गुणगान...)

कर तू गुरु गुणगान भाई, कर तू गुरु गुणगान।
हो जाए कल्याण भाई, हो जाए कल्याण।।
गुरु के गुण को गाने वाला, गुरु गुण को पा जाता है।
कर्म करे इंसान शुभाशुभ, उसके फल को पाता है।।
कर ले तू श्रद्धान भाई, कर ले सद् श्रद्धान... ।।1।।
धर्म अहिंसा पालन करना, महावीर की वाणी है।
पाप कहा पर को दुख देना, कहती ये जिनवाणी है।।
देना जीवन दान भाई देना, जीवन दान... ।।2।।
सत्य वचन औषधि परम है, जख्म हृदय के भरते हैं।
झूठ वचन के कारण प्राणी, दुःख पाकर के मरते हैं।।
रखना तू यह ध्यान भाई, रखना तू यह ध्यान... ।।3।।
पर के धन को हरने वाला, पर का जीवन घाती है।
व्रत अचौर्य है चोरी जग में, नहीं किसी को भाती है।।
चोर कहा नादान भाई, चोर कहा नादान... ।।4।।
भोगी भोग में रत रहकर के, जग में गोते खाता है।
ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से, परम ब्रह्म बन जाता है।।
हो जाता भगवान भाई, हो जाता भगवान... ।।5।।
संग्रह वृत्ति से भूखे कई, लोग जहाँ में रहते हैं।
पाप कमाते 'विशद' जहाँ में महावीर ये कहते हैं।।
दान से हो सम्मान भाई, दान से हो सम्मान।।6।।

पड़ी मझधार में नैया, किनारे पर लगा देना।
हृदय में ज्ञान का दीपक, मेरे गुरुवर जला देना।।
भ्रमण कीन्हा है इस जग में, महा मिथ्यात्व में फंसकर।
मेरे गुरुवर मेरे दिल में, विशद श्रद्धा जगा देना।।

(तर्ज : अरे द्वारपालों सुदामा से...)

अरे गाँववालों सभी से ये कह दो,
गुरुजी नगर के करीब आ गये हैं।
जगे हैं सभी के सौभाग्य भाई,
जो हम सब गुरु की शरण पा गये हैं।।
गुरुवर जी आये, मुनिवर भी आए।
क्षुल्लक और ऐलक, संग अपने लाए।।
गमन करते-करते, न जाने कहाँ से,
गुरुवर नगर के समीप आ गये हैं।।1।।
हम सब को जाना, गुरुवर को लाना।
उपदेश गुरुवर का, हमको भी पाना।।
गुरुवर के दर्शन अरु, उपदेश अनुपम मन में।
हमारे भी श्रेष्ठ भा गये हैं।।2।।
आहार कराएँगे, पुण्य कमाएँगे।
गुरुवर की सेवाकर, भाग्य जगाएँगे।।
विशद गुण है गुरुवर के, जीवन भी अनुपम।
उनके चरण की, शरण आ गये हैं।।3।।
सत्संग गुरुवर के, आने से मिलता है।
श्रद्धा का उपवन भी, अन्तर में खिलता है।।
गुरुवर के आने से, जन-जन के मन में भी।
अनुपम शुभ हर्ष छा गया है।।4।।

रहम करता जो औरों पर, विशद इंसान कहलाए।
दिले न प्यार जिसको है, वही शैतान कहलाए।।
नहीं भगवान बनकर के, कोई आता जमीं पर है।
करें सत् कर्म दुनियां में, वहीं भगवान कहलाए।।

(तर्ज : एक तू न मिला सारी....)

मुझे तू मिल गया सारी दुनियाँ मिले न तो क्या ?
मेरा मन खिल गया सारी बगिया खिले न तो क्या ?
मैं तो इंसान हूँ और तू है मेरे भगवन्, पाना मैं चाहूँ तेरे द्वय चरण।
भक्ति दिल में बसे, शक्ति तन में रहे न तो क्या.....।।1।।
तेरे चरणों की मैं चाहता धूल हूँ, रहना चाहूँ सदा तेरे अनुकूल हूँ।
साथ तेरा रहे और दुनियाँ रहे न तो क्या.....।।2।।
चरणों में तेरे जो रह लेते हम, जिन्दगी में कोई फिर न रह जाता गम।
शरण तेरी मिले 'विशद' कोई मिले न तो क्या.....।।3।।
मंजिल दर मंजिलें कई पाते रहे, हम अपना सभी को बनाते रहे।
मोक्ष मंजिल मिले और मंजिल मिले न तो क्या.....।।4।।
देखकर लोग कई हमसे जलते रहे, राह पर फिर भी हम अपनी चलते रहे।
ज्ञान दीपक जले और दीपक जले न तो क्या.....।।5।।

(तर्ज : तुझे भूलना तो चाहा...)

गुरुदेव विशद ज्ञान की गंगा बहा रहे हैं।
सद्भक्त यहाँ आके, उसमें नहा रहे हैं।।
तीर्थंकरों की ध्वनि को, आगम कहा गया है।
महावीर प्रभु की वाणी, जग को सुना रहे हैं।। सद्भक्त...
सदज्ञान आचरण को, गुरुदेव धारते हैं।
चर्या के द्वारा आगम, सबको पढ़ा रहे हैं।। सद्भक्त...
अनुयोग चार पावन, जिनधर्म में कहे हैं।
गुरुदेव सार इसका, सबको बता रहे हैं।। सद्भक्त...
गुरुदेव परम आगम, जिनचैत्य हैं जिनालय।
सर्वज्ञ कलिकाल के, गुरुदेव कहा रहे हैं।। सद्भक्त...
आशीष प्राप्त करने, गुरुदेव शरण आएँ।
गुरुदेव तरण-तारण, जग में कहा रहे हैं।। सद्भक्त...

(तर्ज : सूरज प्यारा...)

सूरज प्यारा चंद प्यारा, प्यारे गगन के तारे हैं।
सारे जग से अनुपम मेरे, जिनवर प्यारे-प्यारे हैं।।

गुण अनन्त हैं श्री जिनेन्द्र के, जिनकी महिमा कौन कहे।
कहने वाला थक जाएगा, भावुकता में शीघ्र जीव वहे।।
रहते हैं इस जग में स्वामी, फिर भी जग से न्यारे हैं।। सारे जग से..

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, हित उपदेशी होते हैं।
भक्त शरण में जो आ जाते, सबके संकट खोते हैं।।
शरणागत यह जग सारा प्रभु, सबके आप सहारे हैं। सारे जग से..

सेठ सुदर्शन का शूली से, सिंहासन बनवाया था।
सती द्रौपदी का प्रभु तुमने, क्षण में कष्ट मिटाया था।।
हम हैं सेवक प्रभु आपके, भगवन आप हमारे हैं। सारे जग से..

नाग-नागिनी को प्रभु, तुमने देवगति पहुँचाया था।
श्रीपाल का कुष्ट मिटाकर, सुन्दर रूप दिलाया था।।
बाल्मीकि अरु अन्जन जैसे, पापी तुमने तारे हैं। सारे जग से..

तुम हो पूज्य हमारे भगवन, हम पूजा को आये हैं।
भाव पुष्प यह विशद श्रेष्ठ शुभ, हाथ में अपने लाए हैं।।
चरण-कमल के अक्स हृदय में, अपने विशद उतारे हैं। सारे जग से..

विशद आशीष पाने को, गुरु के हम यहाँ आए, हृदय के पात्र में अपने, भाव के पुष्प लाए हैं।
गुरु आशीष दो हमको, हाथ अपना उठाकर के, चरण में आपके अपना, हम भी सिर झुकाए हैं।।

गुरु शिष्यों का इस जग में, बड़ा उपकार करते हैं, उन्हें देकर विशद शिक्षा, पूर्ण अज्ञान हरते हैं।
श्रेष्ठ संयम को देकर के, मोक्ष पथ पर चलाते हैं, हरेक दिल में यहाँ देखा, विशद शुभ हर्ष छाया है।।

गुरु महिमा को बढ़ाना चाहिए, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।
ज्ञान यदि पाना है तुमको विशद, तो सुबह-शाम पढ़ना पढ़ाना चाहिए।।

(तर्ज : जहाँ नेमि के.....)

जहाँ गुरु के चरण पड़े, वह पावन धरती है।
पल में ही गुरुवाणी, सबके दुःख हरती है।।

गुरु ने जो गुण पाए, हम भी वह पा जाएँ।
गुरुवर के गुण पाने, गुरुवर को हम ध्याएँ।।
इस जग में गुरु भक्ति, शुभ मंगल करती हैं। पल में ही... ।।1।।

जो मोह-तिमिर छाया, वह हरती गुरुवाणी।
जिन गुरुवर की पूजा, इस जग में कल्याणी।।
तीर्थंकर की वाणी, गुरु मुख से झरती है। पल में ही... ।।2।।

गुरुवर की महिमा को, तुम नहीं समझ पाए।
बनकर के अज्ञानी, इस जग में भटकाए।।
न सुनी गुरुवाणी, यह बात अखरती है। पल में ही... ।।3।।

गुरु मुक्ति मारग के, अनुपम अभिनेता हैं।
उत्तम जो तप करते, कर्मों के विजेता हैं।।
गुरुवाणी क्यों तुमरे, न हृदय उतरती है। पल में ही... ।।4।।

सदियों की तुम अपनी, यह भूल सुधारो अब।
ध्याओ तुम गुरुवर को, पुण्योदय होगा तब।।
सुनके गुरुवाणी विशद, हर भूल सुधरती है। पल में ही... ।।5।।

राहों में फूल बिछाना चाहिए, बिछे हुए शूल हटाना चाहिए।
भाव सहित गुरु भक्ति करिए विशद, फर्ज अपना हरदम निभाना चाहिए।।

भक्ति की माला बनाना चाहिए, श्रद्धा का धागा लगाना चाहिए।
गुरु चरणों में प्रेम से विशद, दोनों हाथों अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।।

भक्ती की कुटिया सजाना चाहिए, श्रद्धा का चौक पुराना चाहिए।
रामजी को दर पे बुलाना है अगर, तो सबरी तुम्हे बन जाना चाहिए।।

(तर्ज : चिट्ठी न कोई संदेश...)

टूटी गई है माला मोती बिखर गये।
चार दिना के बाद न जाने किधर गये।।

ये जीवन जल का बुलबुला, उस पर फिरता फूला-फूला।
सुख में सुखी और दुख में फूला, चतुर्गति का पड़ा है झूला।।
जीवन के दिन व्यर्थ ही मानो गुजर गये।
कर्म किया जैसा फल पाकर उधर गये। चार दिना... ।।1।।

तेरा मेरा का यह घेरा, जोड़ रखा बुधजन का डेरा।
नश्वर है जीवन ये तेरा, चार दिना का जग बसेरा।।
नरक गति के फल को सुनकर, सिहर गये। चार दिना... ।।2।।

जन्म समय पर खुशियाँ छाई, बहु तक बाध बजे।
मित्र स्वजन मिलकर के, आये सुन्दर सजे-धजे।।
होय प्रसन्न सभी लोगों ने, हाथों हाथ लिये। चार दिना... ।।3।।

बाल अवस्था मित्रों के संग, खेल में निकल गई।
तरुण अवस्था तरुणी के संग, मेल में गुजर गई।।
पावन क्षण जीवन के, व्यर्थ ही निकल गये। चार दिना... ।।4।।

अर्ध मृतक सम है बूढ़ापन, हाथ-पैर कपते।
पूजा भक्ति न बन पाती, ना माला जपते।।
जो कुछ सीखा था, जीवन में वह विसर गये। चार दिना... ।।5।।

काल बली आने से कोई, रोक नहीं पाये।
'विशद' चले ना कोई माया, खाली हाथ जाये।।
धन्य हुए जो जीवन पाकर, सम्हर गये। चार दिना... ।।6।।

जिने बिना माँगे मिल गया हो आपके जैसा, तोहफा फिर वह खुदा से क्या माँगे।
आप ही आप है इन निगाहों में, कुछ न कहेंगे हम इससे आगे।।

(तर्ज : दुनियाँ में बसने वाले...)

चरणों में तेरे मेरा, गुरुदेव जी बसर है।
हमको न रंजों गम है, जब तक तेरी नजर है।।

कर्मों के हम सताए, भटके नहीं कहाँ हैं।
सारे जहाँ में तुमको, खोजा नहीं कहा है।।
तेरा ठिकाना कोई, ना ग्राम है शहर है। हमको न...... ।।1।।

आँखों के सामने भी, तुमको न देख पाये।
कई बार दर से तेरे, खाली ही लौट आये।।
नजरों के सामने ही, आया नहीं नजर है। हमको न...... ।।2।।

मेरे जिगर के अन्दर, तू छुपके जा समाया।
सदियों से खोजने पर, तुमको न खोज पाया।।
अपने से विशद क्यों तू, रहता यूँ बेखबर है। हमको न...... ।।3।।

जब वीर का सहारा, हमको यूँ मिल गया है।
सौभाग्य का सितारा, अब मेरा खिल गया है।।
जिस राह पर बढ़े तुम, उस पर मेरा सफर है। हमको न...... ।।4।।

ना मौत की है परवा, ना जिन्दगी का डर है।
मिट्टी में जा समाना, सबका यही हसर है।।
हो हाथ मेरे सर पर, चरणों में ये जिगर है। हमको न...... ।।5।।

आस्था की बेड़ियाँ लगाना चाहिए, संयम की कैद सजाना चाहिए।
प्रभु महावीर द्वारे आएँगे विशद, चन्दना तुम्हें बन जाना चाहिए।।

चन्दना पुकारे स्वामी द्वार पे खड़ी, आइये प्रभु जी उसपे विपदा पड़ी।
बाट जोहती है प्रभु द्वार आएँगे, कर्मों की आकर तोड़िए कड़ी।।

अर्चना को प्रभु तेरे द्वार आएँगे, नाच-गान करके हम गीत गाएँगे।
दूर हमें कितनी भी भेज दीजिए, द्वार पे तुम्हारे बार-बार आएँगे।।

(तर्ज : मधुवन के मंदिरों में...)

तारों की बात क्या है, चंदा भी झूम जाये।
पारस प्रभु के पद में, सूरज भी सर झुकाये।।

बहकर हवायें आती, प्रभु का संदेश लेकर।
करती है वंदना जो, चरणों में ढ़ोक देकर।।
करके चरण का वंदन, आकाश मुस्कराये। पारस प्रभु..... ।।1 ।।

मधुवन में धीमा-धीमा, मकरंद झर रहा है।
सौरभ सुगंध द्वारा, मन मोद कर रहा है।।
फूले हुये गुलों पर, भौंरा भी गुनगुनाये। पारस प्रभु..... ।।2 ।।

यह तीर्थराज शास्वत, शुभ फूल है चमन है।
नर सुर की बात क्या है, करते पशु नमन है।।
मस्ती में झूमते हैं, कई मेघ औ दिशायें। पारस प्रभु..... ।।3 ।।

भक्तों की देखने को, मिलती है कई कतारें।
जो नृत्यगान करते, औ आरती उतारें।
पड़ती है फीकी सारे, संसार की कलायें। पारस प्रभु..... ।।4 ।।

पर्वत की वंदना का, सौभाग्य जो जगाए।
छूटे जहान उसका, मंजिल भी अपनी पाये।।
पारस की वंदना कर, पक्षी भी गीत गायें। पारस प्रभु..... ।।5 ।।

दर्श करने गुरु के तरसते रहे, कष्ट पाने गुरु के अनेकों सहे।
दीजिए आशीष गुरुवर जी हमें, ज्ञान का दरिया हृदय में बहे।।

गुरुवर की भक्ति है जग में भली, श्रद्धा की खिलती है जिससे कली।
प्राप्त हो आनन्द जीवन में विशद, ज्ञान ज्योति जिसके हृदय में जली।।

गुरुवर की महिमा को गाते जाइये, चरणों में शीश झुकाते जाइये।
महिमा है गुरुवर की अनुपम अरे ! आशीष गुरुवर का पाते जाइये।।

(तर्ज : भवसागर में...)

भवसागर में दुख न मिलता, तेरी शरण को पाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण को पाता क्यों ?

सच कहता हूँ मेरे भगवन् ! नहीं प्रेम से आया हूँ।
विपदाओं ने हमको भेजा, व्यथा सुनाने आया हूँ।।
गर्मी जिसको नहीं सताती, वृक्ष के नीचे जाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।1 ।।

तुम तो सुख के सागर भगवन्, दो बूँद मुझे मिल जाएगी।
जाने वाली अंतिम श्वांसे, कुछ पल को रुक जायेगी।।
नदियों में यदि जल न होता, हंस बैठने आता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।2 ।।

जो कुछ तुमको सुना रहा हूँ, वह मेरी मजबूरी है।
जो कुछ करना चाहो भगवन् !, करना बहुत जरूरी है।।
दूध यदि माँ नहीं पिलाये, बच्चा रूदन मचाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।3 ।।

भीख नहीं मैं माँग रहा हूँ, नाही कोई भिखारी हूँ।
स्वामी सेवक को देता है, मैं तो भक्त पुजारी हूँ।।
जितनी नीर लुटाता बादल, उतने ऊपर जाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।4 ।।

भवसागर में.....

मुक्ति के मार्ग पर चलते जाएँगे, ज्ञान के दीपक भी जलते जाएँगे।
शक्ति जगाई यदि हृदय में विशद, तो विघ्न सारे स्वयं ही टलते जाऐंगे।।

श्रद्धा के फूल खिलाना चाहिए, ज्ञान के दीपक जलाना चाहिए।
मुक्ति का मार्ग है अनुपम विशद, संयम से जीवन सजाना चाहिए।।

(तर्ज : यह देश है वीर जवानों का)

जिन धर्म है विशद बहारों का, महावीर की जय जयकारों का।
जिन धर्म का बंधु-3 क्या बोले, महावीर की भक्ति में डोले।। जय हो...

जिन धर्म है काल अनादि का, यह सत्य अहिंसा वादी का।
यह धर्म है श्रद्धाधारी का, यह सम्यक् ज्ञान पुजारी का।।
यह सम्यक् चारित धारी का, यह सागारी अनगारी का।
यह पंचमहाव्रत धारी का, यह आतम ब्रह्म विहारी का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म है सम्यक् ज्ञानी का, यह वीतराग विज्ञानी का।
जिन धर्म है ज्ञानी ध्यानी का, यह तीर्थंकर की वाणी का।।
यह आठ मूलगुण धारी का, यह निश्चय अरु व्यवहारी का।
यह द्वेषी का न रागी का, यह धर्म है सम्यक् त्यागी का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म है जिन अरहंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का।
आचार्य उपाध्याय संतों का, ये वीतराग भगवन्तों का।।
यह मंगल है चत्तारि का, यह लोगोत्तम चत्तारि का।
यह प्राणीमात्र उपकारी का, यह शरण कही चत्तारि का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म बड़ा हितकारी है, चर्या क्रिया कुछ न्यारी है।
पापों का नाशनहारी है, जिन धर्म की वृत्ति प्यारी है।।
यह मोक्ष मार्ग का हेतु है, यह भव सागर का सेतु है।
यह सिद्धशिला का केतु है, यह 'विशद' लोक का जेतु है।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

फूल खिलते तो बहुत हैं पर मकरन्द कुछ ही फैलाते।
टूटकर गिर भी जाते वह जो अपनी शान पर इतराते।।

(तर्ज : तेरे नाम हमने किया.....)

तेरे चरण हमने किया है, जीवन अपना अर्पित SS गुरु SS
शरण में SS आया हूँ तेरे SS करना कृपा मुझ पर ये गुरु SSS

तुमको पूजा हमने, श्रद्धा के फूलों से।
रखना दूर हमें गुरु, कर्मों के सूलों से।।
कर्मों के द्वारा गुरु बहुत सताए हैं।
उनसे बचने चरण शरण में आए हैं।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

सारा जग हमको सपना सा लगता है।
बस तेरा दर हमको अपना सा लगता है।।
तेरे दर्शन करने को मन कहता है।
वाणी सुनने को लालायित रहता है।।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

मेरा जीवन है विशद आपके हाथों में।
नहीं मिला अपना कोई रिश्ते नातों में।।
तूने दिया सहारा जग में लोगों को।
पाया संयम छोड़ के जग के भोगों को।।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

गुरु चरणों विशद हमने ये अपना माथ रक्खा है।
मुझे गुरुवर ने तब से ही हमेशा साथ रक्खा है।।
मुझे न मौत से डर है नहीं परवा किसी की है।
मेरे गुरुवर ने मेरे सिर पर विशद जब हाथ रक्खा है।।

आचार्य दिवस (कविता)

पद आचार्य दिवस हे गुरुवर !, मिलकर यहाँ मनाते हैं।
तुम जिओ हजारों साल गुरु, हम यही भावना भाते हैं।।
कलिकाल के महावीर बन, गुरुवर ने अवतार लिया।
भारत देश की वसुन्धरा को, हे गुरुवर तुमने धन्य किया।।
जिओ और जीने दो सबको, वीर ने यह सन्देश दिया।
उस नारे का गुरुवर तुमने, पूर्ण रूप उपदेश किया।
गुरु चरणों में जो आते हैं, धन्य भाग्य हो जाते हैं। तुम जिओ.. ।।1 ।।

जहाँ चरण गुरु के पड़ जाते, कण-कण पावन हो जाता।
निर्मल नीर चरण में आते, गंधोदक शुभ बन जाता।।
चरण वंदना करने वाला, अपना भाग्य बढ़ाता है।
शरण प्राप्त करने वाला तो, श्रेष्ठ भक्त बन जाता है।।
शिवपथ के राही बनते जो, अनुगामी बन जाते हैं। तुम जिओ.. ।।2 ।।

गुरुवर के गुण हम गा पाएँ, मुझमें वह सामर्थ्य नहीं।
चरण वंदना हम कर पाएँ, मेरे वह सौभाग्य नहीं।।
ब्रह्मा विष्णु शिव तीर्थंकर, गुरु में सभी समाए हैं।
बृहस्पति भी गुरुवर के गुण, पूर्ण नहीं गा पाए हैं।।
विशद गुरु पद विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं। तुम जिओ.. ।।3 ।।

शुभ सरिता की धार हो गुरुवर, तुम रोके न जाओगे।
बाहर से तुम जा भी सकते, हृदय से न जा पाओगे।।
गुरुवर के दर्शन करके शुभ, भक्त सभी हर्षाएँ हैं।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का, हम पर्व मनाने आए हैं।।
यहाँ रहो तो दर्श आपके, हम सबको मिल जाते हैं। तुम जिओ.. ।।4 ।।

उदय में पुण्य शुभ मेरा यहाँ पर आज आया है, गुरु चरणों में जो हमने अपना सिर झुकाया है।
विशद हम भाग्यशाली हैं यहाँ जो आज बैठे हैं, गुरु के पाद-प्रच्छालन का, अवसर हमने पाया है।।

मेरे बागवान

गुरुवर क्या मिल गये, दो जहान मिल गये।
उजड़े हुए चमन को, बागवान मिल गये।।

तेरे कदम निशान बने, मंजिलें मेरी।
पा मंजिलें स्वयं से ही, अंजान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।1 ।।

मन नहीं करता अब कभी, स्वर्गों की कामना।
मेरे लिए तो आप ही, भगवान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।2 ।।

बस मेरी जिन्दगी का सफर, अब हुआ खतम।
तेरे कदम थमे, मेरे मुकाम हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।3 ।।

क्षमामूर्ति कहो या विशदसागर कहो।
ये नाम आपके मेरी पहचान बन गये।।
उजड़े हुये चमन को, बागवान मिल गये।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।4 ।।

पर्व हमें दिल से मनाना चाहिए, गुण हमें गुरुवर के गाना चाहिए।
धर्म के हैं आलय ये गुरुवर विशद, चरणों में माथा झुकाना चाहिए।।

गुण हमें मुनियों के गाना चाहिए, भक्ति से शीश झुकाना चाहिए।
परमेष्ठी पावन हैं जग में विशद, श्रद्धा हृदय में जगाना चाहिए।।

कमल को सूर्य से मुख मोड़ना मंजूर नहीं, योगी को भोगों से नाता जोड़ना मंजूर नहीं।
दुनियाँ में कुछ भी होता रहे कोई गम नहीं, पर मुझे गुरुवर के चरण छोड़ना मंजूर नहीं।।

अंधेरे वक्त में चाँदनी रात याद आती है, बीते हुए दिनों की हर मुलाकात याद आती है।
जब जब भी मन का चैन खोता है गुरुवर, आपकी समझाई हुई हर बात याद आती है।।

हकीकत–ए–जिन्दगी (जिन्दगी की सच्चाई)

हर पल सोच को बदलते देखा है हमने।
इन्सान के अरमानों को जलते देखा है हमने।।

सुना है एक खूबसूरत गुलिस्ताँ है जिन्दगी।
पर इसे भी सूर्य सा ढ़लते देखा है हमने।।

वात्सल्य (प्यार) पाने का अरमान लिए जिन्दगी में।
हर घड़ी दिल को तड़पते देखा है हमने।।

कहता है जमाना प्यार से बढ़कर कुछ नहीं।
उसे भी चौराहे पर बिकते देखा है हमने।।

चोट खाए, ठुकराए हुए मन पर।
इन्सान को मलहम लगाते देखा है हमने।।

टूटे हैं दिल जिसके हजार बार।
टुकड़े संजोए आज भी जीते देखा है हमने।।

जहाँ से बैगाने होने का लिए मलाल।
आँसू के भवसागर में बहते देखा है मैंने।।

कोई फिर बसाएगा आशियाना आकर।
उन्हीं उम्मीदों को जलाते देखा है हमने।।

किस्मत वालों के नसीब में प्यार होता है जहाँ का।
हर पल किस्मत को बदलते देखा है हमने।।

जिन्दगी से अब क्या आस लगाएँ साथ की।
अपनों को (उसे) भी दामन झटकते देखा है हमने।।

जीवन के सूने मंदिर में, आशा के पावन शंख बजे।
तुम जाओ तो अँधियारे में, किरणों के स्वर्णिम साज सजे।।

तर्ज – बाजे कुण्डलपुर में बधाई...

बाजे नगरी में आज बधाई–2, कि मेरे मुनिराज आए हैं।
कि मेरे महाराज आए हैं, गुरुराज जी....
जागे भाग्य हैं आज हमारे–2, कि नगरी में हर्ष छाए हैं....
शुभ घड़ी पुण्य की आई–2, कि एक उपदेश पाए हैं....
गुरु चरण धुलाए हमने–2, कि गंधोतक श्रेष्ठ पाए हैं....
घर चौके लगाए हमने–2, कि आहार के भाग्य पाए हैं....
सब नमन करें चरणों में–2, कि गुरु आशिष पाए हैं....
करें वैयावृत्ति श्रावक–2, धन्य सौभाग्य पाए हैं....
यहाँ आरती उतारें आके–2, भक्ति के गीत गाए हैं....
हम दर्श को तेरे आए–2, कि चरणों में सिर नाये हैं....
हम पूजा करने गुरु की–2, कि द्रव्य यह साथ लाए हैं....
करें विशद वंदना भक्ति–2, कि पुण्य वह श्रेष्ठ पाए हैं....

बिन माँगे ही यहाँ पर भरपूर मिलता है, आशाओं से अधिक जी हुजूर मिलता है।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बंधु !, पर पाश्र्व प्रभु के दर पर जरूर मिलता है।।

माथे में सबके किस्मत की लकीर होती है, शुभाशुभ पाना अपनी-अपनी तकदीर होती है।
उनका जीवन मंगलमय हो जाता है प्यारे भाई !, पाश्र्व प्रभु की जिनके हृदय में तस्वीर होती है।।

असुर नहीं अब सुर बनकर के स्वर संगीत बजाना है, अष्ट द्रव्य को धोकर भाई सुन्दर थाल सजाना है।
देव-शास्त्र-गुरु की पूजा कर पाना पुण्य खजाना है, अष्ट सुगुण प्रगटाकर अपने सिद्धशिला पर जाना है।।

अपने हृदय में प्रभु की जागीर बना रखी है, पाश्र्व प्रभु की अनुपम तस्वीर बना रखी है।
उन्हीं को माना है हमने अपना सब कुछ, उनके चरणों में अपनी तकदीर बना रखी है।।

जब तक चमन में सुमन खिलते रहेंगे, जब तक जमीं पर दीप जलते रहेंगे।
आप कहीं भी रहना मेरे गुरुवर कोई बात नहीं, जब तक जीवन रहेगा हम आपसे मिलते रहेंगे।।

आज का इंसान भी देखो कितने महान् हैं, छोटी सी जिन्दगी पर अनेक उसके अरमान हैं।
बातें तो वह आसमान की करता प्यारे भाई, कुछ करके दिखा सब कुछ कहना तो बहुत आसान है।।

आओ महावीर...

आओ तुम महावीर धरा पर, एक बार फिर से आ जाओ।
हिंसा, चोरी, अत्याचारी से, भारत की लाज बचाओ।।
हे वीर ! प्रभु तुमसे रखता यह, भारत देश बहुत कुछ आशा।
नहीं मिले जब तुम हमको, छाई मन में बहुत निराशा।।
कुर्सी पर बैठे गद्दारों ने, लूटा देश का आज खजाना।
शांति दूत बनकर के भगवन्, तुम भारत का ताज बचाना।।
जन-जन के मन में तुम प्रभुजी, देश प्रेम का गीत सुनाओ।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।1।।
कहीं बाढ़, भूचाल कहीं, बस की टक्कर हो जाती है।
चावल, दाल, अरु तेल कहीं, शक्कर भी खो जाती है।।
जो भी बैठा है गद्दी पर, उससे पाई बहुत निराशा।
आन संभालो तुम भारत को, सबकी लगी है तुम पर आशा।।
दीनों के अंतश की चाहत को, सुनकर प्रभुजी आ जाओ।।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।2।।
सोने की चिड़िया भारत को, लूटा आज लुटेरों ने।
शासन करके लूट लिया है, इस भारत को गोरों ने।।
अब भी इस प्राचीन देश को, शस्त्रों का बल पाक दिखाता।
छुप-छुप करके जाने कितने, उल्टे-सीधे जाल बिछाता।।
जाल बिछे हैं जो भी जितने, उनको आकर तुम सुलझाओ।।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।3।।
पुकार कर रहे मूक पशु भी, जिनका आज गला है कटता।
बन बैठे कई देश शिरोमणि, फिर भी करते कितनी शठता।।
अधिक कहें क्या? आकर देखो, कैसी है ये अर्थव्यवस्था।
'विशद' सिंधु वंदन कर कहता, आन दिखा दो फिर से रस्ता।।
त्रिशला के नंदन बन करके, कुण्डलपुर में फिर से आ जाओ।
आओ तुम महावीर धरा पर, एक बार फिर से आ जाओ।
हिंसा, चोरी, अत्याचारी, से भारत की लाज बचाओ।।

आओ गुरुदेव...

आओ हे गुरुदेव ! यहाँ पर, एक बार तुम भी आ जाओ।
धर्म भावना भूल चुके जो, उनको आकर धर्म सिखाओ।।
हे गुरुवर ! तुम पर ही टिकी हैं, हम सब भक्तों की आशाएँ।
कैसे समझाना है भव्यों को, आप जानते सब भाषाएँ।।
भटक रहे माया के चक्कर में, उनको निज का ज्ञान कराना।
रत्नत्रय की ढाल को लेकर, शांति देने को आ जाना।।
शक्ति छुपी है इनके अन्दर, आकर के गुरु शक्ति जगाओ।। आओ...
हो सकता है आपके आ जाने, पर भी कुछ शांति आ जाये।
नया सृजन हो इस समाज में, शायद कुछ परिवर्तन आ जाये।।
उलझन में उलझे जो प्राणी, उलझन उनकी तुम सुलझाना।
धर्म एकता की शक्ति का, इन लोगों को भान कराना।।
जहर फूट का भरा जो इनमें, आकर के सब जहर नशाओ।। आओ...
कहीं कुँआरी रह न जाये, दुखियों के अंतस् की चाहें।
आकर ऐसा काम करो कि, आपको जनता खूब सराहे।।
मन में बहुत उमंगें उठती, सुनकर श्री गुरुवर का नाम।
दर्शन करने को ललचाते, यहाँ भविक जन चारों याम।।
धर्म की ज्योति जलाकर गुरुवर, अपना भी कुछ नाम कमाओ।। आओ...
पर्यूषण का पर्व है आया, मुग्ध हुआ हे मेरा तन-मन।
अन्तर का स्नेह प्रकट कर, पुकार रहा गुरुवर को जन-जन।।
विश्वविभूति हो विरागसिंधु तुम, महावीर प्रभु के लघुनंदन।
आकर कुछ परिवर्तन कर देना, करते हैं हम पद में वंदन।।
सुनने को लालायित श्रावक, आकर कुछ उपदेश सुनाओ।। आओ...
हर्षित मन कितना होगा जब, संघ सहित तुम आओगे।
देवपुरी सी शोभा होगी, जब चर्या को तुम जाओगे।।
अनुपम दृश्य होगा कितना शुभ, संघ गली से जब गुजरेगा।
नगर धर्म और सब समाज का भी भविष्य भी तब सुधरेगा।
'विशद हृदय में खुशियाँ देकर, श्रद्धा के शुभ सुमन खिलाओ।। आओ...

गजल

मेहनत से कली फूल, उगाता है बागवाँ।
अमृत कली को लेके, पिलाता है वागवाँ।।
करता नहीं है खेद, गुलिस्तान गुलों की।
लेकर कतरनी काट, सजाता है वागवाँ।।
उड़ती थी जहाँ धूल, कटीली थी झाड़ियाँ।
वीरान गुलिस्तान, बनाता है वागवाँ।।
सदियों से लगे आये, कचरे के ढ़ेर थे।
उस ढेर को अग्नि से, जलाता है वागवाँ।।
खिलते हैं फूल पाकर, सूरज की रोशनी।
हँसकर गुलों को आप, हँसाता है वागवाँ।।
फूलों में जाके भरता, मकरन्द चाव से।
सारे जहाँ में खुशबू, लुटाता है वागवाँ।।
मंड़राते 'विशद' भौंरे, मकरन्द चुसते।
टूटे हुए दिलों को, मिलता है वागवाँ।।

है बताओ क्या करें...

आसमां से रक्त झरता, है बताओ क्या करें।
देखकर के दिल दहलता, है बताओ क्या करें।।
भर रही हैं आह अबलाएँ, जहाँ मर्दों के बीच।
जिगर क्या पत्थर पिघलता, है बताओ क्या करें।।
बेरहम इंसान कितना, आज का यूं हो गया।
जख्म खाकर न बदलता, है बताओ क्या करें।।
भोर होते ही हजारों, कत्ल होते भूमि पर।
बाद में सूरज निकलता, है बताओ क्या करें।।
धर्म औ इंसानियत का, उठ रहा देखो धुआँ।
आज इंसा विष उगलता, है बताओ क्या करें।।
हरेक चेहरे पर उदासी, छा रही है ऐ विशद।
हर तरफ तूफान चलता, है बताओ क्या करें।।

कविता (केशलुंच)

दृश्य देखके केशलुंच का, रोम-रोम थर्राते हैं।
तन-मन कंपित हो जाता है, आँसू भर-भर आते हैं।।
यह संसार असार जानकर, तन को नश्वर जाना है।
तन में रहता है जो चेतन, उसको अपना माना है।।
हो विरक्त इन्द्रिय भोगों से, मन को जीता करते हैं।
स्वजन और परिजन जो सारे, उनकी ममता हरते हैं।
पञ्च महाव्रत धारण करके, सत्-संयम अपनाते हैं।। तन-मन...
केशलुंच का दृश्य देखने, वाले आँसू बहाते हैं।
किन्तु निःस्पृह वृत्ति वाले, मुनिवर जी मुस्काते हैं।।
कठिन साधना करने वाले, सभी परीषह सहते हैं।
सहते शीत ऊष्ण की बाधा, शांत भाव से रहते हैं।
घोर परीषह आ जाने पर, जरा नहीं घबराते हैं।। तन-मन...
केशलुंच यूँ करते जैसे, घास उखाड़ा करते हैं।
बालतोड़ या घाव कष्ट से, जरा नहीं जो डरते हैं।।
छोटा सा घर नहीं छूटता, वर्षा में टप-टप करता।
दो अंगुल भूमि की खातिर, भाई-भाई से लड़ जाता।
महल मकान धनधान्य स्वजन से, मुनि निस्पृह हो जाते हैं।। तन-मन...
कोमल तन सुकुमाल मुनि का, छाले पैरों में आये।
स्थिर ध्यान लगाए बैठे, नौच स्यालनी भी खाए।।
गरम-गरम आभूषण पाण्डव, मुनियों को पहनाए थे।
गजकुमार मुनिवर के सिर पर, शत्रु अग्नि जलाए थे।।
कार्तिकेय मुनि के तन से नृप, चमड़ी भी नुचवाते हैं। तन-मन...

जिन्दगी की आखिरी शाम तक चलते रहिए, तय किए अपने मुकाम तक चलते रहिए।
पार्श्वनाथ जी यहाँ विराजमान हैं प्यारे भाई !, चँवलेश्वर पावन तीर्थ धाम तक चलते रहिए।।

बात करता हूँ

हर चमन को गुलजार बनाने की बात करता हूँ।
यदि जागना चाहो तो जगाने की बात करता हूँ।।
तिमिर छाया है मिथ्यात्व, और अज्ञान का सदियों से।
घोर अंधेरे में दीप जलाने की बात करता हूँ।।
लोग भटक रहे हैं अन्जाने राही की तरह।
मैं उनसे स्वयं को मिलाने की बात करता हूँ।।
क्यों दूर भागते हो परमात्मा से इतने बंधु !
परमात्मा को दिल में बसाने की बात करता हूँ।।
बिछे हैं सूल अनगिनत आपकी राहों में।
उन सूलों को हटाने की बात करता हूँ।।
क्यों बना रहे हो जमीं पर ये नश्वर मकान।
मैं शास्वत मकान बनाने की बात करता हूँ।।
लोग इतना जो जिन्दगी से परेशान हैं भारी।
उन्हें सद्राह दिखाने की बात करता हूँ।।
फूल जो खिलने के लिए आतुर है सदियों से।
विशद फूलों में मकरन्द भरने की बात करता हूँ।।
इन्सान की जिन्दगी को किस प्रकार जिया जाता है।
मैं जिन्दगी का चाल-चलन सिखाने की बात करता हूँ।।
लोग किस्मत की दम पर जिन्दगी जीते हैं सारे।
मैं अपने हाथों किस्मत बनाने की बात करता हूँ।।

सारे गमों को नम कर देंगे आप आके तो देखो।
राज जिन्दगी का बता देंगे आप आके तो देखो।।
हर मुसीबतों से बचाना हमारा काम है प्यारे भाई।
अपने आँचल में छुपा लेंगे साथ आके तो देखो।।

भजन

(तर्ज : बीता पल नहीं वापस आता है.....)

रात्रि में जो भोजन करता है, कई जीवों के प्राण वो हरता है।
रोगी हो जाता है, हिंसक कहाता है, कर तू जरा चिन्तवन ।। क्योंकि... ।।1 ।।
बिन छाने जो पानी पीता है, पशुओं सम वह मानव जीता है।
जीवानी डाले न, जिन धर्म पाले न, कैसा है तेरा करम ।। क्योंकि...।।2 ।।
मद्य मास मधु सेवन करता है, पापी पाप से जरा न डरता है।
नरकों में जाता है, भारी दुःख पाता है, जिनवाणी का है कथन ।। क्योंकि...।।3 ।।
जिनवर के दर्शन को जाना है, अपना यह कर्त्तव्य निभाना है।
हिंसा हम छोड़ेंगे, फल भी न तोड़ेंगे, जिनमें है जीव असंख्य ।। क्योंकि... ।।4 ।।

(तर्ज : पल-पल जीवन .....)

गुरु के चरणों में जो आता है, बिन माँगे वह सब कुछ पाता है।
गुरुवर हमारे हैं, पावन सहारे हैं, करना है गुरु को नमन ।। क्योंकि... ।।
जिसने गुरु को न पहिचाना है, अज्ञानी है वह तो अन्जाना है।
गुरुवर को पाना है, उनके गुणगाना है, करना हमेशा चिन्तवन ।। क्योंकि... ।।
गुरुवर सबको ज्ञान सिखाते हैं, मोक्षमार्ग सबको दिखलाते हैं।
संयम को पाते हैं, सबको दिलाते हैं, करना है संयम वरण ।। क्योंकि... ।।
गुरुवर शुभ उपदेश सुनाते हैं, व्यसनादि से हमें बचाते हैं।
जो गुरु को ध्याते हैं, उर में सजाते हैं, उनका हो जीवन चमन ।। क्योंकि... ।।
गुरु के गुण हम सब गाएँगे, चरणों में यह शीश झुकायेंगे।
गुरुवर ही ब्रह्मा हैं, विष्णु शिव शंकर हैं, करना 'विशद' चिन्तवन ।। क्योंकि... ।।

यह आपका तीर्थ ही है यहाँ निशंक होकर आइये, बसंत की बयार पाके है खुश होकर मुस्कराइये।
यदि जीवन को मधुवन बनाना चाहते हो विशद, तो पार्श्व प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाइये।।

(तर्ज–जब बसाने का मन में...)

जिस जगह में प्रभु का बसेरा नहीं, उस जगह में कभी तुम न जाया करो।
हो सकें स्वप्न पूरे नहीं जो विशद, व्यर्थ ही स्वप्न न तुम बनाया करो।।
जिनके सिर पर गुरु का न साया रहे, जिन्दगी उसकी वीरान हो जाएंगी।
उदय मिथ्यात्व का जिसके है ये विशद, पूजा–भक्ति भी उसको नहीं भाएगी।
जिसने गुरुवर को दिल में बसाया नहीं, मार्ग उसका समीचीन खो जाएगा।
न मिलेगी शरण कहीं पर भी उसे, बेसहारा वो इंसान हो जाएगा।।
करके पालन स्वयं अपने कर्त्तव्य का, भावना रोज बारह भी भाया करो।।1।।
गुरु माता–पिता हैं प्रभु भी अरे !, गुरु ब्रह्मा हैं विष्णु ये शिवधाम हैं।
गुरुवर श्रेष्ठ गीता हैं श्रीकृष्ण की, गुरु रामायण हैं, गुरु श्रीराम हैं।।
होगा कल्याण उसका भी संसार से, सच्चे मन से जो गुरुवर को भी ध्यायेगा।
पूजा–भक्ति करेगा जो त्रययोग से, मोक्ष मंजिल को वह शीघ्र ही पायेगा।।
जिस भजन में प्रभु का नहीं नाम है, उस भजन को कभी भी न गाया करो।।2।।
गुरु सूरज हैं प्राची के जग में शुभम्, कर रहे जो प्रकाशित ये जग को यहाँ।
श्रेष्ठ उपवन महकता हैं गुरुवर मेरे, जिनसे होता सुवासित ये सारा जहाँ।।
अर्चना जो करेगा शरण प्राप्तकर, मोक्ष का मार्ग वह जीव पा जाएगा।
ज्ञान पाके विशद आठ गुण सिद्ध के, श्रेष्ठ शिवपुर का वासी वह हो जाएगा।।
देव–गुरु–शास्त्र का दर्श करने 'विशद', रोज ही भाव से आप जाया करो।।3।।

(तर्ज– आसरा इस जहाँ में मिले..)

आज कर लो प्रतिज्ञा, सभी मिल यहाँ, देवदर्शन को हम सब, सदा जाएंगे।
छानकर के ग्रहण जल, करेंगे स्वयं, रात्रि भोजन कभी हम नहीं खाएंगे।।1।।
जैनियो जैन बनकर, रहो तुम सदा, वीर का श्रेष्ठ यह एक संदेश है।
गुरु सेवा करो नित्य, प्रति ऐ विशद, जैन आगम का वश, ये ही उपदेश है।।
जैन आगम का नित प्रति करेंगे पठन, संयम पालन से जीवन सजाएँगे हम।
अनशनादि सुतप धारकर के महा, कर्म का भार हमको भी करना है कम।।
स्वपर उपकार करना कहा धर्म है, श्रेष्ठ मानव के अपने ये कर्त्तव्य हैं।

इन गुणों से सहित जो भी संसार में, श्रेष्ठ गुणवान मानव कहे सभ्य हैं।।
जो 'विशद' ज्ञान तप दान से हीन हैं, शील गुण से सहित जमीं पर भार हैं।
श्रेष्ठ जीवन बिताते जो संयमसहित, देव साक्षात् वह संत अनगार हैं।।
हम बढ़ेंगे स्वयं मोक्ष की राह पर, बस हमारा स्वयं एक संकल्प है।।
जिन्दगी का भरोसा नहीं है कोई, हमें जीवन भी तो ये मिला अल्प है।।

(तर्ज– चिट्ठी न कोई संदेश...)

तुम दिया दिव्य संदेश, फिर चले सिद्ध के देश, वहीं पर ठहर गये।
तुम धार दिगम्बर भेष, जा पहुँचे हो स्वदेश वहीं पर ठहर गये।।
निज भेद ज्ञान द्वारा, श्रद्धान किया होगा।
सद् संयम पाकर के, निज ध्यान किया होगा।।
न रहा मोह का लेश, व्रत धारे आप विशेष।। वहीं पर ठहर गये....।।1।।
संवर करके तुमने, आस्रव का रोध किया।
निज ध्यान लगाकर के, आतम का बोध किया।।
जो दिए श्रेष्ठ उपदेश, जग पाया सद् संदेश।। वहीं पर ठहर गये....।।2।।
तुम कर्म घातिया नाश, कैवल्य ज्ञान पाया।
शुभ दिव्य देशना कर, शिव मारग दिखलाया।।
न कर्म रहें अवशेष, यह रहा 'विशद' उद्देश्य। वहीं पर ठहर गये....।।3।।

(भजन)

हो... बाबा के बोलो जयकारे, आकर के बाबा के द्वारे।
चंवलेश्वर तीर्थ है प्यारा, भव्यों का तारण हारा।। हो बाबा...
द्वारे पे हम तेरे आए, चरणों में शीश झुकाए।
हमने सुना तुम स्वामी, भक्तों के तारण हारे।। हो बाबा...।।1।।
महिमा तुम्हारी जो गाये, भव–सिंधु वह से तर जाए।
हम भक्त चरण के तुम्हारे, तुम हो प्रभु जी हमारे।। हो बाबा...।।2।।

जिसने शरण तेरी पाई, उसने ही बिगड़ी बनाई।
भक्ति करें जो प्राणी, भव के सुख पाएँ सारे।। हो बाबा...।।3।।
हम भी शरण प्रभु आये, ये द्रव्य सजाकर लाए।
तुम चाँद प्रभुजी निराले, हम भक्त बने हैं सितारे।। हो बाबा...।।4।।
विनती 'विशद' सुन लीजे, हम पे कृपा प्रभु कीजे।
भक्ति प्रभु कैसे गाएँ, ज्ञाता सभी गाके हारे।। हो बाबा...।।5।।

तर्ज - फूल तुम्हें भेजा...

पार्श्व प्रभुजी दर पे बुला लो, कब हमको दर्शन होगा।
मन व्याकुल है बहुत समय से, मन मेरा निर्मल होगा।।
सबको तुमने दर पे बुलाया, हमको क्यों बिसराया है।
खता हुई क्या हमें बताओ, दर पे नहीं बुलाया है।।
जागेगा सौभाग्य अहा जब, जीवन मेरा चमन होगा।।1।।
हमको यह विश्वास है दिल में, मेरी ओर निहारोगे।
इक दिन वह भी आयेगा जब बेटा कहके पुकारोगे।।
चरणों में सिर रखकर तुमरे, मेरा विशद नमन होगा।।2।।
परम दयालु तुम हो भगवन्, हमने ऐसा जाना है।
सद्भक्तों को हृदय लगाते, सारे जग ने माना है।
वह दिन कब आएगा मेरे, कर्मों का भी शमन होगा।।3।।
गाँवपति क्षण में दुःखियों के, सारे दुःख का हरण करे।
इस भव के सुख विशद प्राप्त कर, मुक्ति वधु का वरण करे।।
कब वह क्षण आयेगा भगवन्, शिवपुर मेरा गमन होगा।।4।।
चरण शरण के भक्त बनें हम, यही भावना भाते हैं।
त्रय भक्ति युत चरण आपके, सादर शीश झुकाते हैं।।
दो आशीष मुझे जिससे प्रभु, भव-भव नाश भ्रमण होगा।।5।।

रामभक्त

मेला घूमने भक्त राम का, एक बार पत्नि के साथ।
बैग वस्त्र भोजन आदि का, लिए हुए था अपने हाथ।।1।।
यात्री चारों ओर से आए, भीड़ लगी थी चारों ओर।
नृत्य-गान करने वालों का, मचा हुआ था भारी सोर।।2।।
कोई आता कोई जाता, कोई करता था स्नान।
आने-जाने वालों से कोई, करता था अपनी पहिचान।।3।।
पत्नि खो जाती मेले में, राम भक्त की जब एक बार।
फिरा खोजता आगे-पीछे, वह पत्नि को बारम्बार।।4।।
किसका कौन कहाँ पर जाए, नहीं किसी को इसका भान।
स्वयं सम्हलना मुश्किल होता, कौन रखे फिर किसका ध्यान।।5।।
धक्का-मुक्की हुई अचानक, छूट गया पत्नि का हाथ।
आगे-पीछे फिरा खोजता, नहीं मिला पत्नि का साथ।।6।।
पत्नि के खो जाने पर वह, भक्त हुआ भारी बेहाल।
श्रीराम के द्वारे पहुँचा, दौड़ा-दौड़ा वह तत्काल।।7।।
तीन काल के ज्ञाता स्वामी, तुम हो तीन लोक के नाथ।
पत्नि खोज के ला दो (भगवन्) मेरी, जोड़ रहा तब आगे हाथ।।8।।
सुनकर राम भक्त से बोले, आया क्यों तू मेरे पास।
अपनी बीती मैं कहता हूँ, भक्त करो पूरा विश्वास।।9।।
मेरी पत्नि जब खोई थी, बड़ा हुआ था मैं बेहाल।
हनुमान जब खोज के लाए, थे लंका जाके तत्काल।।10।।
शीघ्र चला जा तू भी लंका, रावण करता है यह काम।
अथवा हनुमान से जाकर, शीघ्र बता पत्नी का नाम।।11।।
शायद तेरी पत्नि भी वह, ला देंगे रखना विश्वास।
नहीं देर कर विशद शीघ्र जा, तू भी हनुमान के पास।।12।।

कविता (भक्त की पुकार)

श्री गणेश के द्वारे आया, एक भक्त भागा-भागा।
गणपतिजी से उसने भी शुभ, इक वरदान स्वयं माँगा।।
विशद आपके सेवक हैं हम, सदियों से सेवा करते।
दर पर आके सबसे पहले, चरणों में माथा धरते।।
लड्डू आदि भोग लगाने को, लेकर हम आते हैं।
अगरबत्ती हम खुशबू वाली, आके रोज लगाते हैं।।
घी के दीप जलाकर के हम, रोज आरती करते हैं।
दिन होवे या रात कभी भी, आने से न डरते हैं।।
मैं हूँ भक्त आपका स्वामी, विनती मम् स्वीकार करो।
अपनों से अपने जैसा ही, स्वामी तुम व्यवहार करो।।
लोग गाड़ियों पर चढ़कर के, रोज घूमने जाते हैं।
मस्ती करते देख उन्हें हम, खड़े-खड़े ललचाते हैं।।
गाड़ी एक दिला दो हमको, भक्ति के बदले हे नाथ !
सेवक बने रहेंगे हरदम, जोड़ रहे हम दोनों हाथ।।
श्री गणेशजी प्रकट हुए तब, बोले बात सुनो हे भक्त !
सेवा तुमने मेरी कीन्ही, खुश होकर के आठो वक्त।।
स्वयं घूमता मैं चूहे पर, गाड़ी कहाँ से लाऊँगा।
चूहा चाहो तो ले जाओ, मैं पैदल चल जाऊँगा।।
गाड़ी मैं ईंधन हेतु तू, पैसा कहाँ से लाएगा।
चूहा घर में किसी के घुसकर, भर के पेट आ जाएगा।।
बात मान ले भक्त हमारी, छोड़ स्वयं गाड़ी का ख्याल।
पत्नी तेरी बाट जोहती, इसी वक्त जा तू तत्काल।। इसी..

दान जो पात्र को देते बड़े वह भाग्यशाली हैं, जहाँ में श्रेष्ठ वह मानव धर्म उपवन के माली हैं।
नीर ज्यों वृक्ष में जाकर कटु या मिष्ट होता है, दान में दी गई वस्तु नीर सम होने वाली है।।

(तर्ज - करें हम ध्यान किस किसका...)

कहाँ हम जाए किस दर पे, गुरु दरबार काफी है।
बनायें हम किसे अपना, गुरु परिवार काफी है।।
गुरु माता-पिता-भाई, गुरु दाता हमारे हैं।
करें हम प्रेम किस-किससे, गुरु का प्यार काफी हैं।।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु शिवराम हैं भाई।
करें उपकास किस किसका, गुरु उपकार काफी हैं।।
करें जो काम अनुपम शुभ, जहाँ में नाम हो उनका।
नहीं उपहार हम चाहें, गुरु उपहार काफी हैं।।
भटकते लोग दर-दर पर, कहीं न चैन मिलता है।
कोई न द्वार बाकी है, गुरु का द्वार काफी है।।
नहीं धन धाम की चाहत, जमाने में रही मेरी।
नहीं आगार मैं चाहूँ, गुरु अनगार काफी हैं।।
लगे हैं रोग जन्मादि, अनादि साथ में मेरे।
कोई उपचार न पाया, गुरु उपकार काफी है।।
कोई न साथ देता है, मौत जब पास आती है।
नहीं चाहत 'विशद', कोई गुरु आभार काफी है।।

भजन (तर्ज - जु......)

त्रिसला का लाल प्यारा, जग में निराला है।
दर्श करे जो प्रभु का, भाग्य वह जगाए।।
भक्ति करके जीव जग में, पुण्य शुभ कमाए।
रोशनी पा ज्ञान की, ये जगमगाए।।
महामोह की गहरी नींद में, सारा जग भरमाए।
स्वार्थपूर्ण दुनियां में आके, उनको कौन जगाए।।

युग-युग से देखा ये सपना, मात-पिता परिवार है अपना।
अंत में कोई भी आके, साथ न निभाए।। दर्श....

कर्म बंध करके ये मानव, चतुर्गति में डोले।
माया मोह में फंसा हुआ ये, मिथ्या का विष घोले।।
कभी नहीं ये निज को जाने, निज स्वभाव को न पहिचाने।
भव-भव में जाके प्राणी, दुःख ही तो पाए।। दर्श....

दिव्य देशना की, दर्श प्रभु दर्शन, ज्ञान प्रगटाएँ।
भेद ज्ञान के द्वारा अपनी, चेतन शक्ति जगाएँ।।
निज गुण अपने हमें जगाना, अपने सारे कर्म नाशाना।
विशद ज्ञान मेरा भी अब, प्रभु जाग जाए।। दर्श....

(तर्ज - जिस भजन में गुरु...)

जिस देश में गुरु का वास नहीं, उस देश में रहना ना चाहिए।
जिस वचन में खुद विश्वास नहीं, उस वचन को कहना न चाहिए।।
इंसान कोई अन्याय करे, अन्याय को सहना न चाहिए।
कोई करे प्रशंसा कितनी भी, दीवार सा ढहना न चाहिए।। जिस....
है सत्य धर्म उत्तम जग में, न झूठ वचन मुख से कहिए।
शुभ धर्म अहिंसा श्रेष्ठ कहा, जिन धर्म सहारे ही रहिए।। जिस....
गर कदम बढ़ाना शिव पथ में, फिर पीछे मुड़ना न चाहिए।
परिवार स्वजन परिजन सब के, कभी राग से जुड़ना न चाहिए।। जिस....
जो सर्व परिग्रह त्यागी हैं, उन्हें कपड़े गहना न चाहिए।
कोई करे बुराई कितनी भी, आवेग में बहना न चाहिए।। जिस....
अरे ! देख के दौलत औरों की, कभी मन में जलना न चाहिए।
हो 'विशद' मित्र शत्रु कोई, कभी उनको छलना न चाहिए।। जिस....

तर्ज - पारस प्यारा लाग्यो...

गुरुवर प्यारा लाग्यो, म्हारा मुनिवर प्यारा लाग्यो।
थांकी प्यारी प्यारी वाणी, थाकी मुद्रा लगे सुहानी।।
म्हारा प्यारा-2 गुरुवर जी, म्हारा प्यारा-2 मुनिवर जी।
थाने सम्यक्दर्शन पाया, थाने सम्यक्ज्ञान जगाया।
थांका सम्यक्चारित भव्यों को, शिवमार्ग दिखाने वाला है।।
म्हारा प्यारा-2...... ।।1 ।।
थाके पंच महाव्रत पाए, थांकी पंच समीति गाए।
थाने पंच इन्द्रिय जय पाके, मोक्षमार्ग अपनाया है।।
म्हारा प्यारा-2...... ।।2 ।।
थाने षड् आवश्यक पाए, थाने सप्त शेष अपनाए।
थाने आठ बीस गुण धारण करके, अतिशय संयम पाया है।।
म्हारा प्यारा...... ।।3 ।।
थाने बारह तप भी पाए, थाने क्षमा आदि अपनाए।
थाने पंचाचार का पालन करके, शिवपथ को दर्शाया है।।
म्हारा प्यारा...... ।।4 ।।
थाने सम्यक् तप को पाया, थाने ध्यान विशद अपनाया।
थाने कर्म निर्जरा करने का शुभ, अपना लक्ष्य बनाया है।।
म्हारा प्यारा...... ।।5 ।।

आदिनाथ सम मम गुरु महावीर से वीर, जीवों पर करुणा करें हरते जग की पीर।
संयम पथ पर चलाते करते दुःख का अंत, युग-युग तक होते रहें मम गुरुवर जयवंत।।

कोई चाँद पर जाना चाहता है तो कोई सूर्य को छूना चाहता है।
कोई गगन में उठना चाहता है तो कोई तारों को छूना चाहता है।।
मैं तो हमेशा भावना भाता हूँ कि सिद्धशिला पर वास करूँ।
किन्तु उसके पहले मेरा मन 'विशद' आपके चरण छूना चाहता है।।

तर्ज – चल चला जिन मंदिर मां, बाबा की जय होरे छे–2

मेरा–मेरा कहता फिरता, कोई साथ न जावे छैं।
जन्म हुआ तब रूदन मचाया, नर–नारी हर्षाए थे।
ढोल नगाड़े खूब सजाए, उछल–उछल के नाचे छै।।1।।
बड़ा हुआ तब पढ़ने जावे, नंबर भारी पावे छे।
नहीं नौकरी मिल पाई तो, कोई काम न आवे छै।।2।।
युवा हुआ तो ब्याह रचाया, पत्नी को घर लावे छे।
रंग–रेलियां खूब मनाए, कोई काम न आवे छै।।3।।
हाथ–पैर न काम करें जब, वृद्ध अवस्था आवे छै।
किया काम न होवे कुछ भी, तृष्णा खूब सतावे छै।।4।।
मुख से लार टपकती जावे, खासी खुर्रा आवे छै।
पोता–पोती कोसें मन में, बुड्ढा कब मर जावे छै।।5।।
आवे जब यमराज सामने, आँख खोलके देखे छै।
हाथ–पैर थक जाने पे वह, गला पकड़ ले जावे छै।।6।।
चार जने कांधे पर लेके, अग्नि बीच जलावे छै।
ज्ञानी कुछ कर ले जीवन में, व्यर्थ बीत न जावे छै।।7।।
'विशद सिंधु' कहते हैं भैया, नरभव फिर न पावे छै।
करने से सत्कर्म जीव ये, मुक्ति वधु को पावे छै।।8।।
मोक्ष महल में जावै छै।

ध्यान साधना की ऊँचाई विशद गगन में फैली है,
चिंतन मनन मनोहर जिनका अनुपम प्रवचन शैली है।
मोक्ष मार्ग के राही गुरुवर संघ के शुभ संचालक हैं,
मूलगुणों का पालन करते पंचाचार के पालक हैं।।

ये जीवन ग़म और खुशी का मेला है, इतने बड़े जहान में विशद तू अकेला है।
अपना बनाया ही क्यों तूने दुनियाँ को, इन दुनियां वालों ने तेरी जिन्दगी से खेला है।।

तर्ज –जब से मिला..

जय हो गुरुवर की ।
जब से किया गुरु का गुणगान, तब से हुआ मेरा कल्याण–4
मेरी बल्ले–बल्ले हो गई–2
गुरु चरणों में जो भक्ति से, अर्चा करने जाता है।
गुरुवर का आशीष भक्त के, सारे विघ्न नशाता है।।
हमने किया गुरु का सम्मान......।।1।।
इस दुनियां में रहने वाले, अपने से जो हारे हैं।
उनके लिए जहाँ में अनुपम, गुरुवर एक सहारे हैं।।
ऐसा कहते हैं विद्वान......।।2।।
बनकर भक्त गुरु के पद में, जो भक्ति से आते हैं।
गुरुवर की भक्ति से अपना, जीवन विशद सजाते हैं।।
जग जाता उनका उपमान......।।3।।
जागे हैं सौभाग्य हमारे, गुरु के दर्शन पाए हैं।
पूर्व पुण्य का योग मिला जो, गुरु चरणों हम आए हैं।।
मिल गई जो गुरु की मुस्कान.......।।4।।
भव–भव में मेरे गुरुवरजी, देना अब मुझको तुम साथ।
'विशद' भाव से चरण–कमल में, झुका रहे हैं हम ये माथ।।
देना तुम पद में स्थान......।।5।।

जैन होकर भी हैं कुछ, जो दूर रहते धर्म से, मूलगुण नाहिं जानते अनभिज्ञ अपने कर्म से।
स्नेह उनको है अधिक अपनी स्वयं की चर्म से, है झुका माथा विशद उनका बहुत अब शर्म से।।

यादें और वादों के सहारे हम जिए जाते हैं, गम के घूंट फिर भी खुश होके पिए जाते हैं।
विशद इसी प्रकार जिन्दगी पूर्ण होने आ गई, कुछ पाने की उम्मीद नहीं फिर भी इंतजार किए जाते हैं।।

जिसने अँधेरों में, ज्ञान के दीपक जलाएँ हैं, औरों की राह में, बिछे शूल भी हटाएँ हैं।
वह इंसान नहीं देवता है, पृथ्वी पर, जो अपनी जिन्दगी, परोपकार के लिए बिताए हैं।।

पाद-प्रच्छालन (तर्ज...)

बड़े पुण्य से अवसर आया है, गुरुवर का जो दर्शन पाया है।
पाद-प्रच्छालन अब, कर्मों का गालन अब, करना है गुरु के चरण।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।
गंधोदक अब माथ लगाएंगे, अपने हम सौभाग्य जगाएँगे।
माथा झुकाना है, आशीर्वाद पाना है, करना है गुरुपद नमन्।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।
कलश नीर के भरके लाए हैं, प्रासुक निर्मल नीर भराए हैं।
हाथों में लेते हैं धारा त्रय देते हैं, गुरुवर के दोनों चरण।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।
मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाया है, संयम से फिर क्यों घबडाया है।
मोह क्यों तोड़ा न, राग क्यों छोड़ा न, करते नहीं क्यों मनन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।
बड़े पुण्य से अवसर पाया है, जैनधर्म हमने अपनाया है।
पुण्योदय आया है, ये पद जो पाया है, मुक्ति पथ कीन्हा वरण।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।
देव-शास्त्र-गुरु का सान्निध्य मिला, अन्तर्मन का जो उपमान खिला।
मन को वश करना है, व्रत से न डरना है, रत्नत्रय करना ग्रहण।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है।

आप कभी नाराज नहीं होना, नहीं रुलाकर औरों को रोना।
जो गुस्सा होते हैं, अपनों को खोते हैं, मिलता नहीं है फिर मन...
करके याद हमें न तुम रोना, आँसू बहाके चेहरा न धोना।
जो-जो भी रोते हैं, निज शक्ति खोते हैं, शांति का करना यतन...
सोच और तुम अपना गम बदलो, पथ का अपना हरेक कदम बदलो।
पर को बदलते क्यों, इतना तुम जलते क्यों, बदलो तुम अपना चिंतन...

कोई छुपके हमें रुलाते हैं, आँखों में मेरी वश जाते हैं।
हम खोजा करते हैं, नित आहें भरते हैं, मन करता मेरा भ्रमण...
ध्यान मेरा जब-जब तुमको आए, बैचेनी यदि मन में तड़पाए।
चुपके से सो जाना, नींदों में खो जाना, करके 'विशद' स्मरण..
रो-रो के क्यों चेहरा सुजा रहे, लगातार क्यों आँसू बहा रहे।
अच्छा न रोना है, होगा जो होना है।। करना विशद चिंतवन...
रोना-धोना बच्चे करते हैं, बार-बार जो आँहें भरते हैं।
ये तो नादानी है, इससे बहु हानि है।। लोगों का है ये कथन...
रोना अच्छा नहीं कहा जाता, जाने क्यों तुमको रोना भाता।
जो ज्यादा रोते हैं, निज शक्ति खोते हैं।। खुशियों का लुटता चमन...
बेटा ! तुम श्रद्धान् नहीं खोना, मुक्ति पथ से विचलित न होना।
लोगों के कहने में, भावुक हो रहने में, निज गुण का होगा हनन...
आप कभी नाराज नहीं होना, नहीं रुलाकर औरों को रोना।
जो गुस्सा होते हैं, अपनों को खोते हैं, मिलता नहीं है फिर मन...
कर्म घातिया आप नशाए हैं, विशद ज्ञान अनुपम प्रगटाए हैं।
छियालिस गुणधारी हैं, जो मंगलकारी हैं, कहलाते हैं जो अर्हन्...
शुद्ध-बुद्ध अक्षय अविकारी हैं, नित्य निरंजन ब्रह्म बिहारी हैं।
अनुपम अरूपी हैं, चेतन चिद्रूपी हैं, शिवसुख में करते रमण...
पंचाचार स्वयं जो धारे हैं, परमेष्ठी आचार्य हमारे हैं।
दीक्षा के दाता हैं, शिक्षा प्रदाता हैं, देते हैं सद् आचरण...
ग्यारह अंग पूर्व के धारी हैं, उपाध्याय होते अनगारी हैं।
ज्ञानी कहाते हैं, पढ़ते-पढ़ाते हैं, करते हैं चिंतन-मनन...
जो निर्ग्रंथ भेष के धारी हैं, विषयों के त्यागी अनगारी हैं।
तप में रत रहते हैं, परिषह भी सहते हैं, करते हैं संयम वरण...
ॐकारमय जिनवर वाणी है, भवि जीवों की जो कल्याणी है।
सत्पथ दिखाती है, चलना सिखाती है, पहुँचाती मुक्ति सदन...

सूर्य–चाँद ज्यों चलते रहते हैं, दीपक जैसे जलते रहते हैं।
रोशन जो करते हैं, सारा तम हरते हैं, करते गगन में गमन...
ज्ञानी ज्ञानाभ्यास में रत रहते, कई उपसर्ग परीषह भी सहते।
साहस न खोते हैं, नर्वस न होते हैं, रहते हैं निज में मगन...
संतों ने यह मन में ठाना है, हमको अब शिवपुर को जाना है।
कोई भी बाधाएँ, जीवन में आ जाएँ, करना 'विशद' वो सहन...
प्यार यदि तुझको मंजूर अरे !, चेतन से तू क्यों न प्यार करे।
चित् शक्तिवाला है, जग से निराला है, रहता है निज में मगन...
माँ के गर्भ में कौल करे प्राणी, ध्यायेंगे हम जिनवर की वाणी।
जन्म जब पाता है, रोता चिल्लाता है, करता है भारी रुदन...
रागी राग बढ़ाने वाले हैं, धर्म कर्म बिसराने वाले हैं।
झूठी इस माया में, मिट्टी की काया में, खो देता अपना धरम...
अपना तुमने जिसे बनाया है, उनसे क्यों न नेह बढ़ाया है।
अपने ही अपने हैं, बाकी सब सपने हैं, इसका नित करना मनन...
अपनों से अपना व्यवहार करो, कभी न तुम उनका अपकार करो।
अपने को जाना ना, अपना भी माना न, कैसा तेरा चिंतवन...
अपने को हर कोई नहीं जाने, जाने पर उसको निज न माने।
अपने अपनाते हैं, अपना बनाते हैं, कर ये विशद तू मनन...
बेटा जिनको प्राण से प्यारा है, मात–पिता का श्रेष्ठ दुलारा है।
उसको पढ़ाते हैं, उसको बढ़ाते हैं, करते हैं उसका भरण...
मात–पिता बेटे से प्यार करें, बेटे उनका न सत्कार करें।
बेटे वह सच्चे न, शायद वह बच्चे न, पूर्व भवों के दुश्मन...
मात–पिता गुरु प्राण से प्यारे हैं, उभयलोक में तारणहारे हैं।
बेटे जो सच्चे हैं, ज्ञानी जो अच्छे हैं, करते हैं उनको नमन्...
बेटे मात–पिता के प्यारे हैं, उनके तो वह आँख के तारे हैं।
अच्छे जो बच्चे हैं, मन के भी सच्चे हैं, करते सदा सद् करम...

बेटे अपना फर्ज निभाते हैं, मात–पिता को नहीं सताते हैं।
दिल न दुःखाते हैं, अपना बनाते हैं, सेवा करें कर यतन...
महक दोस्ती की कम न करना, मन में कोई भी गम न करना।
दूर तन हो सकता, मन नहीं खो सकता, मन में लगाई लगन...
खुशनसीब वह लोग कहाते हैं, गुरुवर के जो दर्शन पाते हैं।
दर्शन की महिमा का, गुरुवर की गरिमा का, कितना करें हम कथन...
सारी पृथ्वी कागज हो जाए, गुरुवर के गुण कोई न लिख पाए।
लेखनी सारा बन हो, नीर सारा जल हो, फिर भी न लिख पावें गुण...
अरहंतों के दर्शन न पाए, महिमा उनकी सुनते हम आए।
निर्ग्रंथ योगी हैं, आतम रसभोगी हैं, कलिकाल के हैं अर्हंन्...
धरती के वह देव कहाते हैं, सकल श्रेष्ठ जो संयम पाते हैं।
भोगों के त्यागी हैं, जग से विरागी हैं, करते हैं इन्द्रिय दमन...
जग में वह नर पूजे जाते हैं, महिमा उनकी प्राणी गाते हैं।
संयम के धारी हैं, पावन अविकारी हैं, निर्ग्रंथ हैं जो श्रमण...
पार्श्व प्रभु का दर्शन पाना है, चरणों की रज माथ लगाना है।
प्रभु ने बुलाया है, अवसर अब आया है, जाना है करके यतन...
बने हुए को सभी बनाते हैं, गिरे हुए को और गिराते हैं।
कैसे अज्ञानी हैं, करते मनमानी हैं, खोते हैं संयम रतन...
खाए–पिए को सभी खिलाते हैं, भूखे तो भूखे रह जाते हैं।
कैसी ये रीति है, कैसी ये प्रीति है, मानव का ना ये धरम...
चार घातिया कर्म नशाए हैं, अनंत चतुष्टय उनने पाए हैं।
दोषों के जो नाशी, समवशरण के वासी, अर्हत् प्रभु पद नमन्...
रागी राग बढ़ाने वाले हैं, धर्म–कर्म बिसराने वाले हैं।
झूठी इस माया में, मिट्टी की काया में, खो देता अपना धरम...
मायाचारी लोग किया करते, नहीं पाप से जाने क्यों डरते।
धर्म वह भूले हैं, माया में फूले हैं, करते न चिंतन–मनन...

कर्म किसी को नहीं छोड़ते हैं, तन-मन से वह सदा तोड़ते हैं।
महिमा निराली है, दुःख देने वाली है, जिनवर का है ये कथन...
गुरु चरणों में जो भी आते हैं, पुण्योदय से आशिष पाते हैं।
भक्ति जगाना है, श्रद्धा बढ़ाना है, पाएँगे आशिष हम...
संस्कार-विज्ञान पढ़ाते जो, आलाप पद्धति भी समझाते जो।
स्वाध्याय करवाते, आगम जो समझाते, ऐसे हैं गुरुवर परम...
पंचकल्याणक जो करवाते हैं, लेखन में जो कलम चलाते हैं।
हरदम खुश रहते हैं, परिषह सब सहते हैं, यही है सद् आचरण...
माँ की ममता श्रेष्ठ समाई है, दयादृष्टि जीवों में पाई है।
महाव्रतधारी हैं, उत्तम अनगारी हैं, पावन हैं उनके चरण...
संघर्षों से लड़ने वाले हैं, मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले हैं।
संयम के धारी हैं, मन से अविकारी हैं, कर्मों का करते शमन...
भोले बाबा जो कहलाते हैं, भव्य जनों के मन को भाते हैं।
दर्शन जो करते हैं, शांति को पाते हैं, करके गुरु पद नमन्....

* * *

वर्षायोग का अवसर आया है, सबने ये सौभाग्य जगाया है।
यहाँ जो आए हैं, सौभाग्य पाए हैं, अपने गुरु की शरण...
भक्तों का भाग्योदय अब जाए, वर्षायोग गुरु का हो जाए।
गुरु दर्श पाते हैं जीवन सजाते हैं, श्रावक भी गुरु के चरण...
वर्षायोग तो एक, बहाना है, आशीर्वाद गुरु का पाना है।
चरणों में आए हैं, माथा झुकाए हैं,पाकर के गुरु की शरण...
वर्षायोग तो हरदम आता है, गुरु सान्निध्य जिन्हें मिल पाता है।
धन्य हो जाते हैं, भाग्योदय पाते हैं, नगरी के सब श्रावक गण...
पूर्व पुण्य का उदय जो आया है, गुरुवर का चौमासा पाया है।
पुण्य की बलिहारी , अनुपम है शुभकारी, हुआ है गुरु आगमन...
जो अपना कर्त्तव्य निभाता है, शीघ्र लक्ष्य को वह पा जाता है।
धर्म ये हमारा है, और न सहारा है, कर्त्तव्य है अपना धरम...

जिसने भी कर्त्तव्य निभाया है, उसने ही शिवपद को पाया है।
विधि ये शुभकारी, पावन मंगलकारी, करना है अब सद् करम...
कर्त्तव्यों का जो पालन करते, उत्तम संयम को मानव धरते।
संयम के धारी हो, पावन अविकारी हो, पाना है लक्ष्य चरम...
विशद ज्ञान की ज्योति जलाना है, अतः हृदय श्रद्धान् जगाना है।
संयम का पालन कर, उत्तम तप धारण कर, शिवपद तू पाए परम...
संतों की जो महिमा गाते हैं, अपने वह सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं, पूजा रचाते हैं, करते हैं शत्-शत् नमन्...
कस्मे वादे लोग किया करते, कई प्रकार से सौगंधे धरते।
उनको निभाते न, पूरी कर पाते न, चंचल है जिसका ये मन...
हुआ आगमन गुरुवर का भाई, हर दिल में शुभ खुशी बड़ी छाई।
भाग्योदय आया है दर्शन जो पाया है, करते हम गुरुवर नमन...
कृपा आप हम पर गुरुवर कीजे, वर्षायोग की अनुमति दे दीजे।
आशा से आते हैं, श्रीफल चढ़ाते हैं, गुरुवरजी दे दो वचन...
वर्षायोग का अवसर आया है, हम सबने ये भाव बनाया है।
गुरुवरजी आयेंगे, प्रवचन सुनाएँगे, मैटेंगे भव का भ्रमण...
सच्चे मन से जो गुरु को ध्याये, क्षण में उसका भाग्य बदल जाये।
महिमा निराली है, शुभ करने वाली है, आगम का है ये कथन...
जिसने गुरु को हृदय बसाया है, मन में सद्श्रद्धान जगाया है।
गुरुवर को ध्याया है, भक्ति को पाया है, कीन्हा है शत्-शत् नमन्...
जैनधर्म के गुरु रखवाले हैं, धर्मध्वजा फहराने वाले हैं।
वात्सल्यधारी हैं, सबके हितकारी हैं, कर्मों का करते हनन...
'विशद' भावना हम ये भाते हैं, गुरु को अपने हृदय सजाते हैं।
शिवपद दिखा दो अब, संयम दिला दो अब, तव पद है मेरा नमन्...
भवसागर में दुःख जो पाए हैं, उनसे बचने तव पद आए हैं।
हमने ये जाना है, हमने ये माना है, करते प्रभु तुम रहम...

सच कहते हम यहाँ जो आए हैं, अपनी व्यथा सुनाने आए हैं।
विपदाएँ घेरे हैं, दुःख भी घनेरे हैं, सुन लो मेरे भगवन्...
धूप के कारण जो अकुलाते हैं, वृक्ष की छाया में वह आते हैं।
कष्टों को हरते हैं, शांति शुभ करते हैं, तीर्थंकर मेरे परम...
हे स्वामी ! तुम सुख के सागर हो, आप तो रत्नों के रत्नाकर हो।
मेरी लाचारी है, मर्जी तुम्हारी है, दे दो चरण की शरण...
हे स्वामी ! हम नहीं भिखारी हैं, हम चरणों के दास पुजारी हैं।
पूजा का फल पाएँ, तुम जैसे बन जाएँ, मिट जाए जन्म-मरण...
आप पतित पावन कहलाते हो, जीवों को भव पार लगाते हो।
जग में निराले हो, शिव देने वाले हो, दे दो विशद आचरण...
दीन-हीन ज्यों पार्श्व मणि पाए, फूल देख सूरज को खिल जाए।
दर्शन कर मेरा मन, खिल जाएँ ज्यों गुलशन, हो जाए जीवन चमन...
जन्म दिवस हर साल मनाते हैं, हमको बीती याद दिलाते हैं।
गर्भ में आए थे, जन्म जब पाए थे, कीन्हा था भारी रुदन।।...क्योंकि
लोगों ने संदेशा पाया था, मन में भारी हर्ष मनाया था।
मिलकर सब आये थे, बाजे बजवाये थे, गाये थे सुखद भजन।।...क्योंकि
देने को उपहार कोई लाते, आशीर्वाद कोई देने आते।
अपना बनाते हैं, खुशियाँ लुटाते हैं, हर्षित हो सारा गगन।।...क्योंकि
जन्म दिवस हर साल मनाते हैं, खुश होकर उनके गुण गाते हैं।
संयम की बलिहारी, जानो ये शुभकारी, करते सभी अर्चन।।....क्योंकि
संतों की महिमा जो गाते हैं, जीवन में बहु पुण्य कमाते हैं।
जन्म-दिवस हो या, दीक्षा-दिवस हो या कीन्हा हो संयमवरण।।...क्योंकि
शिक्षा देने जन्म दिवस आए, लक्ष्य को अपने क्यों भूला जाए।
जग में जो आता है, आखिर वह जाता है, होता अटल ये नियम।।...क्योंकि
अब हमको श्रद्धान जगाना है, 'विशद' ज्ञानयुत संयम पाना है।
शिवपदवी हम पाएँ, जग में न भटकाएँ, मिट जाए भव का भ्रमण।।..क्योंकि

24 जिन स्तवन (बड़े पुण्य से...)

धर्म प्रवर्तन प्रभु जी कीन्हें हैं, षट् कर्मों की शिक्षा दीन्हें हैं।
आदिनाथ स्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, शिवसुख में करते रमण।।
अजितनाथजी कर्म विजेता हैं, मुक्ति पथ के अनुपम नेता हैं।
शिवपद के दाता हैं, जीवों के त्राता हैं, जिनवर हैं पावन श्रमण।।
कार्य असंभव संभव कीन्हें हैं, स्व का चित्त स्वयं में दीन्हें हैं।
संभव जिनस्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, जीवन में करते अमन।।...
अभिनंदन पद वंदन करते हैं, चरणों में अपना सिर धरते हैं।
जग में निराले हैं, शुभ कांतिवाले हैं, सारा जग करता नमन्।।...
सुमतिनाथ यह नाम निराला है, मति सुमति जो करने वाला है।
पंचम तीर्थंकर हैं, मानो शिवशंकर हैं, कर्मों का करते शमन।।...
पद्मप्रभुजी पद्म समान कहे, कमल की भाँति आप विरक्त रहे।
महिमा दिखाई है, प्रतिमा प्रगटाई है, बाड़े को कीन्हा चमन।।...
जिन सुपार्श्व की महिमा न्यारी है, सारे जग में विस्मयकारी है।
जिनवर कहाए हैं, मुक्तिपद पाए हैं, कीन्हें हैं मोक्ष गमन।।...
चन्द्र चिह्न प्रभु के पद श्रेष्ठ रहा, धवल कांति है चन्द्र समान अहा।
चंदा सितारों में, सोहें बहारों में, प्रभुजी हैं चन्द्र वदन।।...
पुष्पदंत जी प्रभु कहाए हैं, दंत पंक्ति पुष्पों सम पाए हैं।
नाम जो पाया है, सार्थक कहाया है, ऐसा है आगम कथन।।...
तन मन से शीतलता पाई है, शीतलवाणी अति दुःखदायी है।
शीतल जिन चंदन है, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन।।...
श्रेय प्रदाता जो कहलाए हैं, निःश्रेयस पद प्रभुजी पाए हैं।
श्रेय दिला दीजे,देरी अब न कीजे, मिट जाए भवकी तपन।।...
वासुपूज्य सुत जग उपकारी हैं, वासुपूज्य जिन मंगलकारी हैं।
चंपापुर प्रभु आए, कल्याणक सब पाए, चंपापुर की शुभ धरण।।...

विमल गुणों को पाने वाले हैं, विमलनाथ जिनराज निराले हैं।
निर्मल जो पावन हैं, अतिशय मनभावन हैं, जग में तारण तारण।।...
गुण अनंत जिनने प्रगटाए हैं, अनंतनाथ जिनराज कहाए हैं।
जग में न आएँगे, अंत ना पाएंगे, करते हैं सुख में रमण।।...
धर्मध्वजा जो हाथ सम्हारे हैं, धर्मनाथ जिनराज हमारे हैं।
धर्म के धारी हैं, अतिशय शुभकारी हैं, करते हम जिनपद वरण।।...
शांतिनाथ पद माथ झुकाते हैं, जिनभक्ति कर हम हर्षाते हैं।
शांति के दाता हैं, जग के विधाता हैं, आते जो प्रभु के चरण।।...
कुंथुनाथ अज लक्षणधारी हैं, प्राणीमात्र के जो उपकारी हैं।
तीर्थंकर पद पाए, चक्री शुभ कहलाए, तेरहवें आप मदन।।...
कामदेव पद जिनने पाया था, चक्ररत्न भी शुभ प्रगटाया था।
अरहनाथ तीर्थंकर, अनुपम थे क्षेमंकर, मैटें जो जन्म-मरण।।...
सब मल्लों में मल्ल कहाए हैं, कर्म मल्ल जो सभी हटाए हैं।
मल्लिनाथ की जय हो, कर्मों का भी क्षय हो, करते हम पद में नमन।।...
मुनियों के व्रत जिनने पाए हैं, मुनिसुव्रतजी जो कहलाए हैं।
शनिग्रह विनाशी हैं, सद्गुण की राशि हैं, कर्मों का कीन्हा क्षरण।।...
विजयसेन सुत नमि जिन कहलाए, अनंत चतुष्टय अनुपम प्रगटाए।
शिवसुख जो पाए हैं, जग को दिलाए हैं, पाए हैं मुक्ति सदन।।...
वर बनके जिनवरजी आये थे, राजमती को ब्याह न पाए थे।
मुनियों के व्रत पाए, संयम जो अपनाए, पशुओं का देखा क्रंदन।।...
उपसर्ग विजेता जो कहलाते हैं, उनके पद हम शीश झुकाते हैं।
समता जो धारे हैं, शत्रु भी हारे हैं, पारस प्रभु के चरण।।...
वर्धमान सन्मति कहलाए हैं, वीर और अतिवीर कहाए हैं।
महावीर कहलाए, पाँच नाम प्रभु पाए, कर्मों का कीन्हें दहन।।....

* * *

मुक्तक

जो श्रद्धा के शुभम् दीप, ज्ञान के सागर हैं,
जो रत्नत्रय से भरे हुए परम रत्नाकर हैं।
इन गुरुवर का गुणगान किस मुख से करे हम,
चलते फिरते तीर्थ यह गुरुवर विराग सागर हैं।।

हैं संतों में महासंत यह आचार्य श्री विराग,
दर्शन से इनके मिटता संसार से भी राग।
यह चन्द्रमा से अधिक शीतल और धवल हैं बंधु,
चन्द्रमा में दाग है पर गुरुवर में नहीं है कोई दाग।।

हमने सब कुछ देख लिया झूठी जिन्दगानी का,
नहीं मिला है ओर छोर जीवन की कहानी का।
क्यों यह जिन्दगी पाकर गरुर करते हो मेरे बंधु,
कब समाप्त हो जाए यह नश्वर बुलबुला पानी का।।

गुणों को जोड़ने पर सफलता हाथ आती है,
अवगुण के ह्रास से आतम विकास पाती है।
संयम की महिमा को अभी जाना ही कहाँ तुमने,
वैरागियों को तो मुक्ति वधु भी पास बुलाती है।।

आस्रव कर्म बंध का हेतु होता है,
संवर मोक्ष मार्ग का सेतु होता है।
धर्म को शायद आपने जाना नहीं है,
धर्म मोक्ष महल के शिखर का केतु होता है।।

हम इन्सान हैं शैतान को इन्सान बनायेंगे,
हम इंसान हैं इन्सान को इन्सान बनायेंगे।
हम पथिक हैं मोक्ष मार्ग के बंधु,
हम इन्सान से इन्सान को भगवान बनायेंगे।।

जल की हर एक बूँद में सागर छुपा बैठा है,
सागर के मध्य तल में रत्नाकर छुपा बैठा है।
हम नहीं जानते किसी सागर रत्नाकर को,
गुरु विराग सागर में तो महासागर छुपा बैठा है।।

जमीं न होती यदि तो आकाश न होता,
दीप में जलन न होती तो प्रकाश न होता।
मिटना कोई बुरी बात नहीं है मेरे बंधु,
यदि अधःपतन नहीं होता तो विकास न होता।।

मौसम की हर सुबह शाम लेकर आती है,
जिन्दगी अपने साथ में मौत लेकर आती है।
मायूस न करना 'विशद' अपने इरादों को,
अपनी यात्रा मंजिल को साथ लेकर आती है।।

शून्यता भर दी हैं लोगों ने शिष्टाचार में,
विश्वास नहीं रह गया आज निष्ठाचार में।
विश्व शांति की निर्मूल आकांक्षाएँ बना बैठे हैं,
लोग तल्लीन होकर के 'विशद' भ्रष्टाचार में।।

सत्य का नारा जिसने कभी न दिया,
काम नेकी का जिसने कभी न किया।
मानव होकर भी वह पशु कहलायेंगे,
आस्था रहित मानव जीवन जिसने भी जिया।।

शोहरत की बुलंदी तो पलभर का तमाशा है,
तन की हिफाजत की नहीं कुछ भी आशा है।
जिस साख पर बैठे हो वह टूट भी सकती है,
भगवान महावीर कथित यह सिद्धान्त खासा है।।

समवशरण जिनदेव का लघु मंदिर के पास बना,
धर्म की वर्षा होती देखो, छाया बादल बहुत घना।
सराबोर होते नर–नारी, होता है मन उनका शांत,
खुश होकर के पूजन कर लो करता तुमको कौन मना।।

व्यापार के बदलते ही बाजार बदल जायेगा,
व्यवहार के बदलते ही प्यार बदल जायेगा।
विधि के विधान को बदलना विशद मुश्किल है,
परिणाम बदलेंगे तो संसार बदल जायेगा।।

गुरु पद भक्ति ही परमात्म पद का मूल है,
गुरु भक्ति से ही मिलता प्राणी को भव कूल है।
धन्य हैं वे प्राणी जो लेते शरण गुरुवर की,
जो शरण नहीं लेते उनकी, यह सबसे बड़ी भूल है।।

बात की बात में विश्वास बदल जाता है,
रात ही रात में इतिहास बदल जाता है।
तू मुसीबतों से न घबरा अरे ! इन्सान,
धरा की क्या कहे आकाश भी बदल जाता है।।

बढ़ो तुम राह पर भाई किसी के साथ हो जाओ,
बढ़ो तुम संत बनकर के स्वयं यथाजात हो जाओ।
तरसते क्यों विशद बैठे देख तस्वीर भगवन् की,
बढ़ो अब इस तरह से कि पारस नाथ हो जाओ।।

जिसे तत्त्वों के प्रति श्रद्धान होता, उसे ही आत्मा का ज्ञान होता है,
जिसके जीवन में मान होता है, उसका बाकी जहान होता है।
कल्याण की चाह यदि, आपके जीवन में प्यारे बन्धु,
जिसे देव शास्त्र गुरु का भान हो, उसी का कल्याण होता है।।

गुरु से ही सच्चा जीवन शुरु होता है,
गुरु बिना जीवन व्यर्थ ही खोता है।
गुरु की महिमा को जाना भी कहाँ आपने,
गुरु के माध्यम से शिष्य भी गुरु होता है।।

संस्कार शैतान को इन्सान बना देता है,
संस्कार इन्सान को महान् बना देता है।
संस्कार विशद शिल्पी का मेरे बन्धुओ,
इस जहाँ में पत्थर को भी भगवान बना देता है।।

संस्कार से ही संसार का विनाश होता है,
संस्कार से ही अघ कर्म का नाश होता है।
संस्कारों को जीवन में कौन नहीं चाहता,
संस्कार जिसके पास है उसका ही विकास होता है।।

चेहरा देख बाल संवारने का काम दर्पण से होगा,
जीवन विकास प्रभु चरणों में अर्पण से होगा।
सत् श्रद्धान की चाह यदि तुम्हें है अपने जीवन में,
तो सच्चा श्रद्धान गुरु चरणों में समर्पण से होगा।।

सीरत नहीं है अच्छी तो सूरत बेकार है,
इंसान नहीं है वह पृथ्वी पर भार है।
आस्था रहित मानव का जीवन व्यर्थ है बन्धु,
मानव नहीं पशु है वह जिन्हें धर्म से न प्यार है।।

साधना को श्रद्धा का आधार देकर तो देखो,
उपासना को भक्ति से श्रृंगार करके तो देखो।
तुम्हारा यह जीवन चमन हो जायेगा मेरे बन्धु,
भावना को आचरण का उपहार देकर तो देखो।।

^pŠV Ho$ \y$b

बने जो मूर्ति मिट्टी की एक दिन गल ही जाती है,
कि अग्नि में पडे लकड़ी सदा वह जल ही जाती है।
'विशद' मूर्ति बनेगी वह मेरे बंधु जमाने में,
तराशे शिल्पी पत्थर को मूर्ति ढल ही जाती है।।

यदि पीना चाहते हो कुछ तो आक्रोश को पीना,
यह जीवन सार्थक होगा सदा तुम धर्म से जीना।
बनेगा स्वर्ण यह जीवन तुम्हारा भी मेरे बंधु,
धर्म की रक्षा में अपना लगा देना विशद सीना।।

सरल होता कथन करना, बड़ा ही त्याग करने का,
करे जो त्याग कहने पर, रहे डर उसके गिरने का।
त्याग करते हैं भावों से, जहाँ में जो मेरे बंधु,
नहीं डर उनको होता है, स्वयं के जीने मरने का।।

बढ़ा दीजिए कदम मंजिल पास नहीं है,
समय (काल) जीवन का तेरा कुछ खास नहीं है।
क्यों करता गरूर चंद क्षण की जिन्दगी पर,
इन श्वाँसों का कुछ भी विश्वास नहीं है।।

पक्षी को दाना दो उतना जितना वह चुन सके,
बोलिए उतना किसी से कोई उसको सुन सके।
व्यर्थ होगा वह तुम्हारा ज्ञान देना ये विशद,
ज्ञान इतना दीजिए जिसको कि वह गुन सके।।

खेद से आलस्य की गोद में जो सड़ रहे हैं,
काटते दिन जिन्दगी के कहने को पढ़ रहे हैं।
वीर की सन्तान होकर आपस में जो लड़ रहे हैं,
दुर्गति के मार्ग पर बन्धु कदम उनके बढ़ रहे हैं।।

पड़े तुमको कहीं रोना, कि ऐसा काम क्यों करना,
समय के बीत जाने पर, स्वयं ही आँह क्यों भरना।
सम्हलता जो समय के पूर्व, वही इन्सान है साही,
बढ़े पुरुषार्थ करके जो, वो होता मोक्ष का राही।।

गति कोई नहीं बाकी, जहाँ पर जन्म न पाया,
रहा स्थान कोई ना, जहाँ जाकर न भरमाया।
रहा क्या द्रव्य इस जग का, नहीं जो आपने खाया,
यदि पाया नहीं कुछ तो, आज तक शिव नहीं पाया।।

अनेकों मंजिले पाईं, कि पाये हैं कई सेवक,
पाई दौलत करोड़ों की, रहा उस पर हमारा हक।
शुकूँ लेकिन नहीं पाया, खेद इसका बड़ा हमको,
साथ जिसका किया हमने, पाया उससे ही है गम को।।

खाई ठोकरें इतनी, जहाँ में जाने अनजाने,
भटकते ही रहे हरदम, किसी की एक न माने।
मोह ने घेरा यूँ डाला, किया मजबूर था हमको,
शक्तियों को भी रोका था, कि छीना था मेरे सम को।।

स्वयं को जान न पाया, नाम पर नाम कई पाये,
खोजकर पग थके लेकिन, स्वयं को खोज न पाये।
आज तक जो भी कुछ पाया, रहा वह मात्र इक सपना,
विशद पाया नहीं अब तक, वही था आपका अपना।।

घर है जहाँ में कौन सा जो वीरान ना हुआ,
खिला गुल कौन सा है जो परेशान न हुआ।
तन ये पाता जीव संसार में हर एक ही,
तन है वह कौन सा जो बेजान न हुआ।।

झूठ बोलने में माहिर, जमाने में कोई शेष नहीं,
मानव मुख से सत्य बात का, निकल रहा है लेश नहीं।
बात-बात में झूठ बोलना यह मानव का काम है,
झूठ बोलते लाखों दिन में, हरिशचंद्र तो नाम है।।

कई लोग हैं ऐसे जो बिस्तर छोड़ पाते नहीं हैं,
अपनी वृत्ति को धर्म की ओर मोड़ पाते नहीं हैं।
क्या हो गया है आज के इन्सान को बन्धु,
अपनी राह को मोक्ष मंजिल से जोड़ पाते नहीं हैं।।

एकान्तवादी के कथन का जहाँ में न कुछ स्थान है,
विशद वाणी स्याद्वादी का बड़ा सम्मान है।
गुण अनेकों वस्तु में होते कथन जिनराज का,
करते सभी सम्मान है जिनधर्म के शुभ ताज का।।

तेरे चरणों की धूल रहे माथे पर मेरे हरदम,
रहे श्रद्धान अति गहरा किसी क्षण भी नहीं हो कम।
प्रभु चरणों की भक्ति से जीवन हो विशद मेरा,
निकल जाए प्राण तन से भी नहीं इसका हमें कुछ गम।।

नहीं कोई भरोसा है बाग यह कब उजड़ जाए,
कौन सी श्वाँस लौटकर के पुनः आये या न आए।
कभी क्या पूर्ण हो पाए जहाँ में लोग जो रहते हैं,
जिन्दगी में मेरे भाई विशद स्वप्न जो हैं सजाए।।

खाना ऐसा कि फिर खाना शेष ना रहे,
जाना ऐसा कि फिर जाना शेष ना रहे।
पाना सब कुछ सरल होता है बन्धुओं,
पाना ऐसा कि कुछ भी पाना शेष ना रहे।।

गुरु ज्ञान के दीप शांति की किरण हैं,
इस संसार में गुरु ही सत्य तारण तरण हैं।
गुरु विराग सागर को बसालो बन्धुओं नयनों में,
संसार में सबसे अधिक पावन गुरुदेव के चरण हैं।।

हैं ऐसे देव जिनके दर्शन से कुमति खो जाती हैं,
जिनके वंदन से दुष्टों की मति सुमति हो जाती हैं।
नित्य करना तुम इनकी पूजा अर्चना मेरे बंधु,
इनकी अर्चा करने से स्वयं की अर्चा हो जाती है।।

भोग विषयों की जिन्हें कोई प्रतिक्षा नहीं,
भोगोपभोग सामग्री होने पर भी अपेक्षा नहीं।
संत वही हैं जो इस दुनियाँ से विरक्त होते हैं,
संतों को तो अपने जीवन की भी इच्छा नहीं।।

पल–पल अमूल्य है जीवन का उसको सफल बनालो,
बचा है जितना जीवन उसमें भी ध्यान लगा लो।
मंजिल दूर नहीं होगी तुम सिर्फ अपना कदम बढ़ाओ,
आतम से निज आतम का पावन दीप जला लो।।

जो आकाश में गमन करता वह आकाश गामी है,
जो वासना की आग में जलता रहता वह कामी है।
जो मन वचन काय से संयम धारण करता है,
वो कुछ क्षणों में होता तीन लोक का स्वामी है।।

क्यों व्यर्थ में खोता जा रहा है जीवन सारा,
आज इन्सान ने तो मौत को भी ललकारा।
तुम महावीर की सन्तान हो किसी और की नहीं,
तो फिर तूँ क्यों स्वयं अपने आप से हारा।।

क्षत्रियों का जो धर्म था वह बनियों के हाथ आ गया है,
इसलिए तो आज शायद विनाश का बादल छा गया है।
छवि ही बिगाड़ दी उस पवित्र जिनधर्म की लोगों ने,
विरक्ति की बात करके धर्म के मूल को ही खा गया है।।

सच्चे संत वही हैं जो इन्द्रियों का दमन करते हैं,
जीव रक्षा हेतु ईर्यापथ से गमन करते हैं।
संत प्राणी मात्र के रक्षक होते हैं मेरे बंधु,
इसलिए लोग इनके चरणों में प्रतिपल नमन् करते हैं।।

मंजिल आती गई और हम कदम बढ़ाते गये,
सप्त स्वरों में भक्ति संगीत को बजाते गये।
परमात्मा परम कल्याणकारी हैं मेरे बन्धु,
वह मोक्ष मार्ग पर चलते और चलाते गये।।

इन गुरुओं का जीवन परम पावन होता है,
इनका स्वरूप बड़ा मन भावन होता है।
जिसके यहाँ पड़ जाते हैं इनके चरण कमल बंधु,
उसके यहाँ पर जेठ में भी सावन होता है।।

जो सच्चे भक्त हैं वह दीन हो रहे हैं,
जो शक्तिशाली हैं वह भक्ति से हीन हो रहे हैं।
मंदिरों में मनुष्य तो कम पक्षी अधिक दिखाई देते हैं,
आज सच्चे भक्त एकदम विलीन हो रहे हैं।।

जीवन का प्रत्येक पल, इन्सान का ध्येय होता है,
अर्हन्तों का सुख और बल सब ज्ञेय होता है।
गधे की भाँति परिग्रह से लदे रहकर पुण्य को हेय मानते,
तुम्हें नहीं वीतरागियों के लिये पुण्य हेय होता है।।

अपनी आदमियत को स्वयं खो रहा आदमी,
दिनकर का उदय होने पर भी सो रहा है आदमी।
आम की चाह में बबूल बीज बो रहा है आदमी,
इस नर भव को विषयों में व्यर्थ ही खो रहा है आदमी।।

सब कुछ समझ में आ जावेगा सत् शास्त्र पढ़कर देखो,
शांति मिलकर रहेगी संयम पथ पर चलकर देखो।
सभी मंजिलें भूल जावेंगी तुम्हें मुक्ति मंजिल पाकर,
विजय प्राप्त अवश्य होगी एक बार कर्मों से लड़कर देखो।।

शांति के लिये प्राणी मात्र के प्रति स्नेह चाहिए,
तप करने के लिये हमें शक्तिशाली देह चाहिए।
सफल होगा तभी हमारा लक्ष्य बंधुओ,
इन गुरुओं का हमें आशीष एवं श्रेय चाहिये।।

जो स्वयं को ना जाने उस अकल से क्या,
नहीं जो राह दिखलाए विशद उस नकल से क्या।
हजारों लोग रहते हैं इस चमकती दुनियाँ में,
परेशां कर दे औरों को होता उस शकल से क्या।।

इन्सानियत का दर्जा शैतान को नहीं देंगे,
वीरानगी का नारा हैवान को नहीं देंगे।
प्राण लुटा देंगे हम गुरुओं की रक्षा में,
अपने माथे का ताज श्मशान को नहीं देंगे।।

पत्थर पर कमल कभी खिलते नहीं हैं,
हिलाने से सुमेरु कभी हिलते नहीं हैं।
संत तो मिल सकते हैं बहुत से मेरे बन्धु,
इन गुरुवर के जैसे संत कहीं मिलते नहीं हैं।।

ऊपर उठता है वही जिसके अंदर छल नहीं है,
सुखी वह है जहाँ मोह का दलदल नहीं है।
मंजिल पर चढ़ने को वह तैयार बैठे हैं,
जिनके जीवन में संयम और आत्म बल नहीं है।।

हम प्रभु को देखकर भी दर्शन नहीं कर पाते हैं,
हम भक्ति करते हुए भी भावों से नहीं भर पाते हैं।
मोक्ष महल का रास्ता तो बहुत सीधा और सरल है,
हम संयम और तप करने का साहस नहीं कर पाते हैं।।

गुरुवर विराग सागर जी संतों के सरताज हैं,
ऐसे संतों को पाकर यह धरती करती नाज है।
संसार समुद्र को पार करने के लिए मेरे बंधु,
परम पूज्य गुरुवर अनुपम एक जहाज है।।

जीवन की सफलता हेतु सत् संस्कार चाहिए,
प्रेम के लिए जीवन में मधुर व्यवहार चाहिए।
अहंकार से तो पतन ही होता है जिन्दगी में बन्धुओं,
सुख शांति हेतु विशद परोपकार चाहिए।।

असंतोष इंसान का इंसान को निगल रहा है,
इंसान का मान और सम्मान हर पल गल रहा है।
खेद की बात है विशद जिन्दगी में मेरे बन्धु,
इंसान का चिंतन और आचरण भी बदल रहा है।।

लोग कहते हैं कि स्वप्न कभी साकार नहीं होते,
साकार क्या जीवन के आधार नहीं होते।
यहाँ भक्तों के स्वप्न भी साकार हो गये,
संत भक्तों से बिछुड़ कर भी पुनः आ गये।।

संसार में लोग संस्कार हीन होते जा रहे हैं,
उनके आचार–विचार विलीन होते जा रहे हैं।
ये स्वयं की करामात का फल हैं मेरे भाई,
लोग दिन–प्रतिदिन दीन–हीन होते जा रहे हैं।।

प्रभु के दर्शन से यह जन्म सफल हो जाता है,
आशीष से गुरुवर के श्मशान महल हो जाता है।
गुरुवाणी के एक–एक शब्द में विशद छंद छुपा है,
गुरु भक्ति का हर लब्ज गजल हो जाता है।।

हम संत हथियार नहीं प्यार से जीतते हैं,
उनकी यादगार में हमारे नयन भी नम हैं।
महावीर को खोकर भी विशद हम खुश हैं,
भगवान महावीर के सिद्धांत हमारे पास हैं यह क्या कम है।।

फूल तो बहुत मिलते हैं पर सुगन्ध देते हैं कोई–कोई,
वर्ण तो बहुत बनते हैं पर छन्द देते हैं कोई–कोई।
इन्सान पहले बहुत थे आज भी कम नहीं है,
पूजा भक्ति तो बहुत करते पर संत होते हैं कोई–कोई।।

कभी गर्मी कभी सर्दी ये तो मौसम के नजारे हैं,
रात में चमकते कभी चाँद कभी तारे हैं।
आश्चर्य क्यों ना हो उन्हें देखकर मेरे भाई,
प्यासे वह रहते हैं जो दरिया के किनारे हैं।।

ज्ञान चरित्र पाने बढ़े जो स्वयं,
कर दिया है परिग्रह को भी जिनने कम।
संत होते विशद वह इस संसार में,
नासते हैं सदा वह तो अज्ञान तम।।

सद्दर्श के शुभम् भाव जागे हमारे,
ये जिन्दगी रहे प्रभु चरणों सहारे।
त्रैयोग से मनन हो प्रभु के चरणों का,
उर में रहें चरण विमल हों प्रभु भाव मेरे।।

आपने आपको आप में वर लिया,
चेतना को स्वयं ही प्रखर कर लिया।
वीतरागी प्रभो हे महावीर जिन !
आपके द्वयचरण में 'विनम्र' नमन्।।

शांति शांति प्रभो शांति शांति करो,
बोधि का दान दे भ्रम की भ्रांति हरो।
वीतरागी प्रभो ! ज्ञान की दो किरण,
आपके द्वय चरण में 'विनम्र' नमन।।

व्यर्थ की आपदा कभी पाली नहीं जाती,
समुद्र में सरिता पहुँचती नाली नहीं जाती।
प्रभु चरणों की भक्ति से कुछ न कुछ जरुर मिलता है,
सच्चे भक्त की भक्ति कभी खाली नहीं जाती।।

अटल तकदीर पर मेरी श्री अरिहंत लिक्खा है,
जुबां पर देख लो मेरे जय जिनेन्द्र लिक्खा है।
आँखों में देख लो मेरे गुरु निर्ग्रंथ लिखा है,
हृदय को चीरकर देखो श्री भगवंत लिखा है।।

हर परिस्थिति में आप मुस्कराते रहना,
तीर्थ वंदना के लिए कदम बढ़ाते रहना।
मंजिल अवश्य मिलेगी प्यारे भाई,
परमात्मा के चरणों में शीश झुकाते रहना।।

अपनी जिन्दगी में एक काम करके देखो,
एक बार चरणों में विश्राम करके देखो।
अवश्य ही सौभाग्य बन जाएगा आपका,
अपनी जिन्दगी पार्श्व प्रभु के नाम करके देखो।।

आपके इशारों पर ही चल रहे हैं हम,
आपके ही रंग में ढल रहे हैं हम।
आपके आशीष की छाँव रहे मेरे सिर पर,
आपकी करुणा के सहारे ही पल रहे हैं हम।।

एक बार दीपक की भाँति जलकर दिखा दीजिए,
एक बार चातक की भाँति पलकें बिछा दीजिए।
जिन्दगी मालामाल हो जाएगी आपकी विशद,
एक बार पार्श्व की अर्चा में मन लगा दीजिए।।

जो परमात्मा की भक्ति, गंगा में समा गये,
जिनके हृदय में उनके सिद्धांत छा गये।
उनके भाग्यका सितारा चमक गया,
जो पार्श्व प्रभु के चरणों में, भक्ति से आ गये।।

पार्श्व प्रभु की भक्ति करना ही काम है मेरा,
इस जीवन का हरपल उनके नाम है मेरा।
अब तो लग गई है पार्श्व प्रभु के चरणों में मेरी लगन,
चँवलेश्वर तीर्थ ही शिवधाम है मेरा।।

बेटे की चाहत वालों तुम, सुनलो मेरी बात,
बेटी होने वाली हो गर, कभी न करना घात।
बेटी को बेटे से कम न आंको, मेरे भ्रात,
बेटी मंगलमय यह होती है जग में विख्यात।।

पार्श्व प्रभु के चरणों में हमेशा आते रहिए,
फर्ज अपना दिल से निभाते रहिए।
एक न एक दिन पुकार अवश्य सुनेंगे,
उनके चरणों में शीश झुकाते रहिए।।

पार्श्वनाथ के गीत हमेशा हम गाते रहेंगे,
उनके चरणों में अपना शीश झुकाते रहेंगे।
पार्श्व प्रभु की भक्ति ही हमारा जीवन है,
उनके दर्शन कर हमेशा मुस्कराते रहेंगे।।

भगवान पार्श्वनाथ बड़े ही चमत्कारी हैं,
द्वार पर आने वाले बन जाते पुजारी हैं।
हमें हमेशा आपका दर्शन मिलता रहे,
आपके चरणों में विशद ढोक हमारी है।।

प्रभु पार्श्वनाथ मेरे नयनों में छा गये हैं,
मेरी वाणी के हर गीत में आ गये हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ का मंदिर मेरा हृदय है विशद,
क्योंकि प्रभु अब मेरे मन मंदिर में समा गये हैं।।

प्रभु पार्श्वनाथ की जहाँ में निराली शान है,
उनके चरणों में झुकता सारा जहान है।
यही सबसे बड़ा चमत्कार है प्यारे भाई !
क्योंकि पार्श्व प्रभु अपने आप में महान् हैं।।

मेरे प्रभु ही विशद शक्ति देने वाले हैं,
मेरे प्रभु ही श्रेष्ठ युक्ति देने वाले हैं।
मेरे प्रभु की महिमा अपरम्पार है प्यारे भाई !
मेरे प्रभु ही जग से मुक्ति देने वाले हैं।।

हे परमात्मा ! आज हम आपके दर्श पाने आये हैं,
मुक्त कंठ से आपके गीत गाने आये हैं।
मेरा मन मंदिर सूना है आपके बिना भगवन्,
अपने मन मंदिर में तुम्हें बसाने आये हैं।।

कभी नहीं पाई वह खुशी हमने पा ली है,
प्रभु पार्श्व की मूर्ति हृदय में सजाली है।
सब कुछ इनके चरणों में समाया है,
इनका दर्शन दशहरा है तो पूजा दिवाली है।।

पार्श्व प्रभु के दर पे जो आता है,
सर खुद व खुद उसका झुक जाता है।
प्रभु का प्रभाव ही कुछ ऐसा है,
रास्ते पर जाने वाला द्वार पर रुक जाता है।।

आज हमारे पूर्व पुण्य का तीव्र उदय आया है,
शायद उस पुण्य ने ही यह अनुपम काम बनाया है।
पहले कभी नहीं मिला हमको यह अवसर,
आज हमने पावन तीर्थ पार्श्व प्रभु का दर्शन पाया है।।

पार्श्व प्रभु का नाम मेरे हृदय में समाया है,
अपनी श्वांसों में प्रभु को मैंने बसाया है।
सोते जागते हम प्रभु का ही नाम रटते हैं,
हमने जो पाया सब प्रभु की कृपा से पाया है।।

हे प्रभो ! मेरी आँखों में, वह तासीर हो जाए,
नजर जिस चीज पर डालूँ, तेरी तस्वीर हो जाए।
भावना है हमारी यह, सभी इंसान भगवान बनें,
पाक राहों पर चले, इंसान तो महावीर बन जाये।।

हर सुबह अपने साथ, नया हर्ष लेकर आती है,
एक-एक दिन व्यतीत होकर, नव वर्ष लेकर आती है।
एक बार अपना पुरुषार्थ, जगाकर देखो मेरे मित्र,
हर सुबह अपने साथ, नया उत्कर्ष लेकर आती है।।

गिरते-गिरते बालक चलना सीख पाता है,
घृत मिलने पर ही दीपक जलना सीख पाता है।
जिस इंसान के अंदर प्रेम होता है प्राणी मात्र से,
वह इंसान ही इंसान से मिलना सीख पाता है।।

प्रभु के द्वार पर जो भी, अपना शीश झुकाएँगे,
भक्ति भाव से अपनी किस्मत आजमाएँगे।
उनकी झोली कभी खाली नहीं रहेगी,
विशद जो चाहते हैं वही फल पा जाएँगे।।

फूल अपनी खुशबू से सभी को लुभाते हैं,
सूर्य किरणों की रोशनी को चारों ओर फैलाते हैं।
यह खुशबू और रोशनी तो नष्ट प्रायः है विशद,
पार्श्व प्रभु तो अलौकिक रोशनी दिलाते हैं।।

पार्श्व प्रभु के जीवन की हर बात निराली है,
अच्छे-अच्छे वीरों को भी चौकाने वाली है।
प्रभु का आशीष जिनको भी प्राप्त हो जाता प्यारे भाई,
उनके जीवन में बिना रंग बिना दीप के होती दीवाली है।।

जहाँ सरिता का प्रवाह चारों ओर हरियाली है,
जहाँ की हर एक बात करामात चौकाने वाली है।
यह तीर्थ कुछ इस प्रकार का है प्यारे भाई !
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर की महिमा ही निराली है।।

जहाँ पत्थरों पर भी कलियाँ खिल जाती हैं,
जहाँ अँधेरों में भी गलियाँ मिल जाती हैं।
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर को कौन भूल पाएगा,
जहाँ सभी की जिन्दगियाँ बदल जाती हैं।।

वो चमन हमेशा खाक में मिल जाया करते हैं,
जहाँ कभी भी बागवाँ नहीं जाया करते हैं।
तन यौवन पर गरूर करने वाले इंसान सम्हल जा,
अंत में इंसान भी मिट्टी में मिल जाया करते हैं।।

कौन कहते हैं कि जाने वाले लोग याद नहीं आते हैं,
जो अपने लिए भाते हैं वह अवश्य ही याद आते हैं।
कभी-कभी ऐसा भी होता है लोगों के बीच रहकर,
जो याद आते हैं वह औरों को बताए नहीं जाते हैं।।

किसी की झोपड़ी में आग कोई भी लगा सकता है,
श्रद्धालु के अंदर श्रद्धान कोई भी जगा सकता है।
महल के उस द्वार पर जाओ कि अन्य कहीं जाना न पड़े,
वरना तुम्हें द्वार से कोई भी भगा सकता है।।

प्रेम प्रकृति का सबसे मधुर उपहार है,
यह उन्हीं को मिलता जिनका अच्छा व्यवहार है।
प्रेम कहीं बाहर खोजने पर नहीं मिलता मित्र,
प्रेम तो विशद अंतश्चेतना की पुकार है।।

रोशनी बिखेरना है तो चिराग की भाँति जलना सीखो,
संसार पार करना तो मोक्षमार्ग पर चलना सीखो।
यदि सिद्ध बनना चाहते हो तो सिद्धी प्राप्त करना होगी,
उसके पहले सिद्धों की भाँति सबसे मिलना सीखो।।

हार मिलने वालों को कभी जीत भी मिलनी है।
पतझड़ के बीतने पर कभी बहार भी मिलती है।।
आशाओं के दीप हमेशा ही जलाए रखना बंधु !
गुरु के उपदेश से विशद ज्ञान की ज्योति जलती है।।

संत का साधना के आयाम पर सख्त पहरा है।
संत का जीवन तो मात्र साधना पर ही ठहरा है।।
साधक और श्रावक रथ के दो पहिए हैं।
दोनों का आपस में संबंध बड़ा गहरा है।।

करें जिनबिम्ब की प्रतिमा प्रतिष्ठा भाव से प्राणी।
प्राप्त करता है तीर्थंकर प्रकृति श्रेष्ठ वह ज्ञानी।।
दिगम्बर वीतरागी जिन की मुद्रा मोक्षदायी है।
जगत में पुण्य की कारण, विशद जीवों की कल्याणी।।

नहीं जिनबिम्ब जिस गृह में उसे तुम व्यर्थ ही जानो।
पक्षियों का कहा गृह वो अनर्थ स्थान वह मानो।।
प्रवृत्ति पाप की उसमें निरन्तर वृद्धिंगत होवे।
जहाँ जिनबिम्ब हो गृह में, विशद वह श्रेष्ठ पहिचानो।।

आज भारत देश की क्या दशा होती जा रही है।
दुनियाँ आतम की चाहत में, बबूल के बीज बोती जा रही है।।
आज इंसान तो चारों ओर नजर आते हैं।
किन्तु इंसान के अंदर से इंसानियत खोती जा रही है।।

***

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान

^pŠV Ho$ \y$b

क्षमावाणी पूजा

(स्थापना)

क्षमा अंग जिन धर्म का मूल कहे तीर्थेश।
सम्यक् श्रद्धा ज्ञान युत, ध्याये इसे विशेष।।
सहधर्मी से प्रेम हो, हो पापों का नाश।
करके जिन आराधना, सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द : ताटक)

निर्मल नीर चढ़ाने लाए, प्रभु चरणों भरके झारी।
जन्म-जरा हो नाश हमारा, आई अब मेरी बारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।1।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चंदन लाए, श्रेष्ठ चढ़ाने मनहारी।
भव आताप विनाश हमारा, हो जाए हे त्रिपुरारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।2।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत चढ़ा रहे हैं, मंगलमय अतिशयकारी।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें हम, बने रहे न संसारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित लिए मनोहर, हमने यह मंगलकारी।
कामबाण विध्वंस करो प्रभु, तुम हो जग संकटहारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।4।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य बनाए हमने, शुद्ध सरस विस्मयकारी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, बन जाएँ हम अविकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।5।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाकर, लाए हैं हम तमहारी।
मोह अंध का नाश करो प्रभु, बन जाओ मम हितकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।6।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप बनाई अष्ट गंध युत, मंगलमय खुशबूकारी।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, बन जाएँ शिवपद धारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।7।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाने, लाए हैं, हम शुभकारी।
मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, पावन है जो शिवकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हैं हम अघहारी।

पद अनर्घ अनुपम है शास्वत, भवि जीवों को सुखकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।9।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पर्व क्षमावाणी विशद, नाशे वैर विरोध।
गाते हैं जयमाल अब, पाने आतम बोध।।

(शम्भू छन्द)

जैनधर्म का मूल कहा है, देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान।
शंका करे नहीं तत्त्वों में, निशंकित गुण कहा प्रधान।।
भोगों की वांछा न करता, निकांक्षित गुण कहे जिनेश।
रहित ग्लानि से होता है, देव-शास्त्र-गुरु में अवशेष।।1।।

जो कुदेव को नहीं मानता, वह अमूढ़ दृष्टि विद्वान।
ढ़ाके अवगुण देवादि के, उपगूहन गुणधारी मान।।
जैनधर्म से डिगने वाले, को स्थिर जो करे विशेष।
साधर्मी से प्रीति करे वह, वात्सल्य गुण कहे जिनेश।।2।।

करे प्रकाशन जैनधर्म का, है प्रभावना अंग महान।
अष्ट अंग पाले सद्दृष्टि, अष्टांग पावे सम्यक् ज्ञान।।
शब्दाचार पठन शब्दों का, अर्थाचार है अर्थ प्रधान।
उभयाचार उभय का वाची, है संकल्प सहित उपधान।।3।।

कालाचार समय से पढ़ना, विनयाचार विनय युत जान।
ज्ञान का हो बहुमान अनिह्नव, गुरु का नहीं छिपाना नाम।।
छहों काय जीवों की रक्षा, करते व्रती अहिंसा धार।
सत्य महाव्रतधारी हित-मित, वचन बोलते हैं मनहार।।4।।

चोरी रहित अचौर्यव्रती है, ब्रह्मचर्य धर त्यागे काम।
परिग्रह त्यागी मूर्छा त्यागे, अपरिग्रही है प्यारा नाम।।
मन गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।
काय गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।।5।।

ईर्या समिति धारी चलते, चार अरत्नि भूमि निहार।
मिष्ट वचन बोले मनहारी, भाषा समिति धार शुभकार।।
छियालिस दोष टालकर भोजन, करें एषणा समीतिवान।
देख प्रमार्जित करके वस्तु, निक्षेपण करते आदान।।6।।

मल एकान्त में करें विसर्जन, समीति प्रतिष्ठापन को धार।
दर्शन-ज्ञान आचरण के गुण, बतलायें ये विविध प्रकार।।
रत्नात्रय की विधि बतायी, क्षमा धर्म के लिए महान।
चैत माघ भादो त्रय महीने, क्षमा धर्म के हैं स्थान।।7।।

दोहा- उत्तम क्षमा को आदिकर, बतलाए दश धर्म।
बाद क्षमावाणी करो, विशद श्रेष्ठ यह कर्म।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तन मन वाणी में क्षमा, जागे छाय महान।
क्षमा धर्म को धारकर, पाएँ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भजन

(तर्ज- मधुवन के मंदिरों...)

बाड़े में पद्मप्रभुजी, अतिशय दिखा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।

मूला था जाट भोला, सपना उसे दिखाया।
सौभाग्य खोदने का, मूला ने श्रेष्ठ पाया।
हम पुण्य के सुफल से, दर्शन जो पा रहे हैं। अतएव....

भक्ति से भक्त आके, प्रभु को पुकारते हैं।
मुद्रा प्रभु की अनुपम, एकटक निहारते हैं।।
आकर के श्रमण श्रावक, गुणगान गा रहे हैं। अतएव....

आते हैं दुःखी प्राणी, दुःखड़ा यहाँ सुनाते।
कर अर्चना प्रभु की, पीड़ा सभी मिटाते।।
कई भूत-प्रेत आकर, महिमा दिखा रहे हैं। अतएव....

दरबार में प्रभु के जाते हैं, रोते-रोते।
आशीष प्राप्त करके, आते हैं हँसते-हँसते।।
चरणों में भक्त आकर, पूजन रचा रहे हैं। अतएव....

है सर्व ऋद्धि सिद्धि दायक, विधान पूजा।
इसके सिवा न कोई है, मंत्र और दूजा।।
यह कृति 'विशद' अनुपम, पद में चढ़ा रहे हैं। अतएव....

* * *

गुरु वंदना

(तर्ज : हूँ स्वतंत्र निश्चल....)

गुरुवर क्यों बैठे चुपचाप, ज्ञान सिखाओ गुरुवर आप।
गलती करो हमारी माफ, राह दिखाओ हमको साफ।।
हम सबका हो पूर्ण विकास, गुरुवर करो दो पूरी आस।
हमको है पूरा विश्वास, चरणों में करते अरदास।। गुरुदेव क्यों...
गुरुवर हो तुम ज्यों आकाश, हम हैं सभी चरण के दास।
चरणों रहे हमारा वास, गुरुवर रहो हमारे पास।। गुरुदेव क्यों...
जग का नहीं है कोई माप, भटक रहे हम करके पाप।

महामंत्र का करना जाप, आँख मींच करके चुपचाप।। गुरुदेव क्यों...
तुम हो गुरु हमारे नाथ, तुम बिन हम हैं सभी अनाथ।
मोक्ष मार्ग में देना साथ, पद में झुका रहे हम माथ।। गुरुदेव क्यों...
करते सभी वार्तालाप, जैन धर्म की छूटे छाप।
मोक्ष महल में होवे वास, मन में लगी हमारे आस।। गुरुदेव क्यों...
मुस्करा करके दो आशीष, चरणों झुका रहे हम शीश।
मोह राग का 'विशद' अलाप, मिट जाए मन का संताप।। गुरुदेव क्यों...

* * *

श्री जिनवर की आरती

(तर्ज- प्रभु रथ पर हुए सवार...)

प्रभु की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे।। टेक।।
सब ठुमुक-ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि में बाज रहे।
श्री नेमिनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे।।1।।

कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे।।2।।

शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरती करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे।।3।।

प्रभु के यह भक्त निराले हैं, प्रभु भक्ति के मतवाले हैं।
प्रभु तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे।।4।।

क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टि मनहारी है।
है विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे।।5।।

* * *